सल्हैता-गुरुमैता

सल्हैता-गुरुमैता

नारायण यादव

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SALHAITA-GURMAITA (सल्हैता-गुरुमैता)

ISBN : A/F
दाम : 200/- (भा.रू.)
सर्वाधिकार © लेखक (श्री नारायण यादव)
पहिल संस्करण : 2023

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
अक्षर संयोजन : डॉ. उमेश मण्डल
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट धारक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

अनुक्रम

सल्हैता/17

गुरुमैता/50

स्व. रामफल मण्डल/72

स्व. अनन्त लाल कामति/77

अभिमत

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलनमे शहीद भेल रामलषण सल्हैता आ महान स्वतंत्रता सेनानी देव नारायण गुरुमैता, रामफल मण्डल आ अनन्त लाल कामतिक भूमिका जन मानसमे सर्वविदित अछि। मुदा आइ धरि एहि महामानव पर कोनो पोथी नहि लिखल गेल छल। समाज आ इलाकामे अखनो हिनका सभक बड़ मान छैन मुदा ई अवश्यमानि अछि किछु शताब्दिक बाद बड़ कम लोक हिनका सभकेँ मोन रखतैन एहेनमे नारायण बाबू जे रामलषण सल्हैता आ देवनारायण गुरुमैता, रामफल मण्डल आ अनन्त लाल कामतिकेँ केन्द्रमे रखैत हिनका सभकेँ कृतित्वकेँ लिपिवद्ध करबा लेल 'सल्हैता-गुरुमैता' शीर्षकसँ पोथी लिखलैन अछि, प्रशंसनीय आ समाजपरक अछि। व्यक्तिगत रूपसँ हम नारायण बाबूकेँ एहि प्रयासक लेल दिलसँ आभार अर्पित करैत छिऐन। ई पोथी लिखक लेल नारायण बाबू गहनत्तम जानकारी अर्जित केने छथिन्ह। जतए धरि हमरा जनतब अछि एहि पोथीक खाका दिमागमे रखैत नारायण बाबू कतेको बेर सल्हैता आ गुरुमैता परिवारमे रहि रिसर्च केने छथिन आ कतेको जानकार आदमीसँ विमर्श केने छथिन्ह परञ्च मूल जानकारी हिनका अपन पूज्यनीया माताजीसँ हाँसिल भेल छैन।

सल्हैता, गुरुमैता शीर्षकसँ लिखल नारायण बाबूक ई पोथी पढ़बाक सौभाग्य हमरा मिलल तँ मनमे आएल जे एहि पोथीमे किछु शामिल करी। तेकरा लेल आवश्यक छल जे हम अपन पितातुल्य आ परमगुरु नारायण बाबूसँ एहि बातक इजाजत ली। जखन हम अपन मनोभाव नारायण बाबूक समक्ष रखलौं तँ ओ हमरा सहर्ष एहि कार्यक लेल उत्साहित केलैन।

एहि पोथीक बारेमे सही बताबी तँ ई पोथी देश आ समाजक

लेल अनन्यो अनुकरणीय कार्य यथा स्वतंत्रता, सद्भावनाक सामाजिक भेद-भाव सभक लेल जन-जनकेँ जागरूक करयबला, स्वतंत्रता आन्दोलनमे अपना पैतृक सम्पति आ अपन प्राणोत्सर्ग करयबला स्वतंत्रता सेनानी सभकेँ हुनकर कार्यक लेल आभार आ आदर अर्पित करबाक भाव अछि।

हम ललन सल्हैता एहि परिवारक एकटा अदना सदस्य छी। एहि परिवारमे गुदर बाबू, जे दरभंगा महाराजकेँ घुटना टेकबा लेल विवश केलखिन, राम लषण सल्हैता जे स्वतंत्रता आन्दोलनमे अग्रणी भूमिका निभेलैन, विसेश्वर सल्हैता जे अपना पंचायतक जीवन पर्यन्त मुखिया रहलाह आ हमर पूज्य बाबूजी श्री सच्चिदानन्द सल्हैता जे अपन पूज्यजनक प्रति सदैत जीवन निमाहलखिन, सभक प्रतिष्ठाकेँ आगाँ बढ़ेबा लेल प्रयासरत् छी। 'सल्हैता-गुरुमैता' नामसँ लिखल नारायण बाबूक प्रस्तुत पोथीमे देव नारायण गुरुमैता, राम लषण बाबू, रामफल मण्डल आ अनन्त लाल कामतिक बारेमे कतेको आरो बात लिखल जा सकैत छल तथापि पोथी अनुकरणीय आ पठनीय अछि।

गुरुमैता पक्षमे रामनारायण गुरुमैता बारेमे वृहत् जानकारी भेटल।

प्रस्तुत पुस्तक लेल जे नारायण बाबूक मेहनति छैन ताहि लेल हिनका प्रति हम सादर आभार प्रकट कए प्रणाम निवेदित करै छी।

- ललन सल्हैता

गज़लकार

मो. न.: 9958507167

नहरी

15 अप्रिल 2023

मेरी ओर से

सन् 1920-30 का काल देश में गुलामी की जंजीर को तोड़ने हेतु गाँधी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह आन्दोलन की अवधि चल पड़ी थी। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आन्दोलन नई अंगराइयाँ ले रही थी। देश की राजनीतिक व्यवस्था व गतिविधियाँ हल-चल मचा रही थी। स्वतंत्रता आन्दोलन की नई सोच से भारत के गाँव भी जग रहे थे। ग्रामीण जन जीवन में ठहरी स्थूलता में नई सिहरण आ रही थी। इसका असर भारत के उत्तरी क्षेत्र 'कोसी कमला का क्षेत्र' में भी होना था और हुआ भी। अकाल बाद महामारियों की त्रिमुर्ति से त्रस्त यह इलाका सदियों से हर वर्ष कोसी के हाहाकार का दंश झेल रहा था। इस दंश का असर यहाँ के वासिन्दों के मन मस्तिष्क पर इतना गहरा था कि इसमें नवजागरण का नया मंत्र फूंका जा चुका था।

नतीजा कोसी के इस बाढ़ग्रस्त इलाके में भी कुछ परिवार व उनके बीच से कुछ व्यक्तित्व ऐसे निकले जिन्होंने 1942 के गाँधी जी के भारत छोड़ो आन्दोलन में अंग्रेजी सत्ताके दमनचक्र के विरूद्ध बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और राष्ट्रीय जागरण व चेतना को कार्य रूप दिया।

लेखक श्री नारायण यादवजी ने बड़ा ही सूक्ष्मत्तम रूप से स्व. राम लषण सल्हैता, स्व. देव नारायण गुरुमैता, भुवनेश्वर गुरुमैता, स्व. रामफल मण्डल एवं अनन्त लाल कामति के व्यक्तिव एवं कृतित्व पर प्रकाश डाले हैं।

ये पाँचो महापुरुषों ने अंग्रेजी हुकूमत के विरोध में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिय थे। एक प्रकार से अपना-अपना जीवन देश की स्वतंत्रता के लिए उत्सर्ग कर दिये थे। जिनका वर्णन बड़े हीं रोचक

ढंग से नारायण यादव जी किये हैं।

श्री नारायण यादवजी मैथिली साहित्य के एक प्रतिष्ठित कथाकार, आलेखकार व कवि हैं। वे बड़े ही खोजपुर ढंग से बड़ी संजिदगी से कोसी क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानी परिवार व व्यक्तित्व को ढूंढ निकाला है, और उनके कृतित्व को रोचकपूर्ण ढंग से लिपिवद्ध किया है। लेखन की शैली बड़ी ही रोचक है। यह पुस्तक पाठक को लगातार एक प्रवाह में बान्धे रखेगी और उत्सुकता को लगातार बनाये रखेगी। मैं श्री नारायण जी के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

- तेज नारायण खेड़वार

प्रसिद्ध साहित्यकार एवं

से. नि. डिविजनल कमान्डेट

ग्राम+पोस्ट: वसन्तपुर

प्रखण्ड: वसन्तपुर

जिला- सुपौल (बिहार)

मो. 7320986886

अभिमत

'सल्हैता-गुरुमैता' पोथीमे मिथिलाक घोषिन यादव आ सर्वहारा वर्गक चारि गोट महान व्यक्तित्वक अति संक्षिप्त जीवनी अछि जे पारिवारिक पृष्ठभूमिसँ स्वतंत्रता सेनानी बनलाह। सल्हैता विवरणीमे दरभंगा महाराजसँ एक मोकदमामे कोनहु रैयतक पहिल विजय जाहिपर महाराजक दिससँ समझौताक सन्देश रोचक अछि। रामलषण सल्हैताक परिवारक कथा कृषि आ गौ पालनक चलते कृषिक विकासक गाथा अछि जे पढ़यमे रोचक अछि। 1942 इस्वीक भारत छोड़ो आन्दोलनक ई महानायक अज्ञातहि रहि गेलाह जे सोचनीय अछि। पोथीक उत्तरार्घमे सल्हैता परिवार सन अनेक महान स्वतंत्रता सेनानीक परिवारमे जन्मल डॉ. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैताक जीवनीक किछु बिन्दु अछि जे बतबैत अछि कोना एक काँग्रेसी पारिवारिक पृष्ठभूमिक बच्चा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघक सेवक ओ प्रचारक बनल आ कहियो प्रवेश परीक्षा लेल शत प्रतिशत अंक आनय वाला बच्चा ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर पोथीपर वरेण्य विद्वान डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदीक निर्देशन में डॉक्टरेट प्राप्त करैत आजन्म अनवरत साहित्य साधना करैत रहैत छथि। सरकारमे मंत्री पदक प्रलोभन ठुकरबैत किन्तु हुनक अप्रतिम योगदान छन्हि। अपन युवाअवस्थामे परिचित रहल प्रधान मंत्री अटल विहारी वाजपेयी लग सर संघ संचालक सुदर्शनजीकेँ पैरवीकार रूपमे ठाढ़ कए मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित करक मार्ग प्रशस्त करब जाहिमे हमर योगदान यैह जे 14.4.1997क नेपालक सिरहा

अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषदक आयोजनमे अपन अध्यक्षता छोड़ि गुरुमैताजी कैँ अध्यक्ष घोषित केनाइ जाहिपर ओ निर्लेप भावसँ बादमे हमरा कहलाह कि सक्सेसन जूनियरसँ होइत छै कि सिनियरसँ, किन्तु हमर निर्णय ठीक छल जे मैथिली आइ अष्टम् अनुसूचीमे अछि। यदि गुरुमैताजी स्वस्थ्य रहितथि तँ पुन: प्रधानमंत्री लग मिथिला राज्यक पक्ष राखि ओहो भेटि गेल रहैत जाहिपर हमर बात हुनकासँ भय गेल छल। हम तँ एहि यादव कुल भूषण लेल यैह कहब जे हुनका सन ओहि शैक्षिक पिछड़ल समाजमे एहन विद्वान 'न भूतो न भविष्यति'।

पोथीक लेखक श्री नारायण यादव, महासचिव, अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषदकेँ हम धन्यवाद दैत छियैन्ह जे ओ पाठक लग चारू परिवारक अनेकानेक महापुरुष सभक नुकाएल व्यक्तित्वकेँ सामने अनलाह अछि। जाहिपर बहुत और काज करक आवश्यकता अछि। हम हिनक उज्जवल भविष्यक कामना करैत छी।

- डॉ. धनाकर ठाकुर

एम.बी.बी.एस., एम.डी., डी.सी.एच.

प्रोफेसर मेडिसिन हेरिटेज इन्स्टीच्यूट ऑफ मेडिकल सांइसेज

वराणसी, संस्थापक नेशनल मेडिकोज, ऑर्गेनाइजेशन 1977

संरक्षक अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद- 1993

मिथिला राज्य संघर्ष समिति- 1995

मो. 9843376861

अप्पन बात

मिथिलांचलक मध्य मधुबनी जिला अन्तर्गत नहरी गाम एक पैघ सर्वहाराक बस्ती अछि। जतय एक-सँ-एक विद्वान आन्दोलनकारी आ जमीन्दार अछि। जाहिमे सल्हैता परिवार प्रमुख अछि। आइ देश आजाद भेल अछि। भारतवासी चैनक नींद सुति रहल अछि। बाहरी आक्रमणसँ लड़ैक लेल हमर फौज पूर्णरूपेँण सक्षम अछि। से ककरा बलपर? प्रत्येक भारतवासीक बीचसँ एक-आध एहेन विशिष्ट व्यक्ति भेलाह जे अपन जीवनक कान्तिकारी आन्दोलनकारीएक बलपर ने। प्रत्येक भारतवासीक बीचसँ एक-आध एहेन विशिष्ठ व्यक्ति भेलाह जे अपन जीवनक बिनु परवाह केने अंग्रेजसँ लड़ैत रहलाह। आजादीक लेल अपने नस्त-नावुद भय गेलाह। सभ सम्पति बर्बाद भय गेलैन्ह। परिवार बिखैर गेलैन्ह। मुदा आजादीक लेल आन्दोलन बन्द नहि केलैन्ह जाहिमे बहुतो नेता लोकनिक नाम इतिहासक पन्नामे आयल। लोककेँ ओहि क्रान्तिकारी आन्दोलनकारीक नाम जनतब भेल। मुदा किछु एहनो लोक भेलाह जे आजादीक लेल जे केलैथ ओ विस्मरणीय अछि। मुदा ओहि महामानवकेँ जननिहार कियो नहि अछि। ओहि गुमनाम महामानवकेँ हम समाजक बीचसँ ताकि अनलहुँ अछि। जाहिमे शहीद राम लषण सल्हैता परिवार, विहारी गुरुमैताक परिवार, शहीद रामफल मण्डल आ अनन्त लाल कामतिक परिवारक त्यागक भूमिका मुख्य अछि। एहिकेँ अतिरिक्त आओरो परिवार हेतैक मुदा

हमरा ओतय तकक पहुँच नहि रहल हैत तेँ हम अखन एहि चारू महामानवक बीचसँ जे आन्दोलन क्रान्तिकारी जन्मल तकर वर्णन एहि गुरुमैता-सल्हैता पोथीमे कयलहुँ अछि। विहारी गुरुमैताक दुनू बेटा राम नारायण गुरुमैता आ देव नारायण गुरुमैता आजादी पयबाक लेल अपन सभकिछु बर्बाद कय लेलैन्ह मुदा अंग्रेजी सरकारक नीति कबूल नहि कय सकलाह। राम नारायण गुरुमैता कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ बी.ए. पास 'अंग्रेजी विषय'सँ कयने छलाह। ओ बड़ पैघ विद्वान छलाह। तहिना पैघ क्रान्तिकारी सेहो छलाह। राम नारायण बाबू अंग्रेजसँ आजीवन आजादीक लेल लड़ैत रहलाह। आ अल्पायुमे एहि संसारसँ चलि बसलाह। सन् 1942क भारत छोड़ो आन्दोलनमे सक्रिय रूपसँ भाग लेलैन्ह। ओहि साल 20 अक्टूबर केँ स्वर्गवास भय गेलाह। स्वर्गवासी होइत काल ओ अपन सुपुत्र श्री भुवनेश्वर गुरुमैताक तीन सवाल छोड़ि गेलाह। बादमे भुवनेश्वर बाबू तीनों वचनक पालन केलैथ। राम नारायण गुरुमैताक बाद एहि इलाकाक आन्दोलनकारीक नेतृत्वकर्त्ता स्व. राम लषण सल्हैता भेलाह जे एकटा अद्भुत व्यक्तित्वक लोक छलाह। ओहो पैघ विद्वान, हिन्दी भाषी आ तंत्र विद्यामे पारंगत छलाह। राम नारायण बाबूक छोट भाए देव नारायण गुरुमैता, गुलाबी सोनार, उपेन्द्र मिश्र आओर सूर्य नारायण सिंह आ अन्य क्रान्तिकारीक नेतृत्वकर्त्ता राम लषण सल्हैता जे नहरी (खुटौना)क भेलाह। आब सभ आन्दोलनकर्त्ता लोकनिक लीडर सल्हैते जी भेलाह। सल्हैताजीक ओतए ई लोकनि छुपिकऽ रहैत छलाह। अंग्रेजक छापामारीपर किछु गोटे पकड़ल गेलाह। जिनका जहल भेलैन्ह। राम लषण सल्हैता जहलमे अपन प्राण त्यागि देलैन्ह। एवम् प्रकारेँ गुरुमैतो परिवारक अनाजक गोदाममे आगि लगा देल गेलैक। राम नारायण गुरुमैताक बाद देव नारायण गुरुमैता सक्रिय भेलाह। एहि प्रकारे गुरुमैता आ

सल्हैताक संग-संग रामफल मण्डल जे सीतामढ़ीक रहैथ, ओहो कतेक अंग्रेजी फौजकेँ अपना हाथे मौतक घाट उतारने छलाह ताहि अभियोगमे हुनका फाँसीक सजा भेलैन्ह। ओहो दृश्य बड़ कारुणीक आ हृदय विदारक छल। एहि कड़ीमे अनन्त लाल कामति सेहो पैघ क्रान्तिकारी रहलाह। ई आन्दोलनक क्रममे कैक बेर जेल गेलाह। एहि बात सभक जानकारी स्व. योगानन्द सल्हैता, श्री सचिदानन्द सल्हैता, कैलाश सल्हैता, ललन सल्हैता, भुवनेश्वर गुरुमैता, जयकृष्ण गुरुमैता, राज कुमार गुरुमैता, विनायक गुरुमैता, अभिषेष गुरुमैता, धनेश्वर गुरुमैता, गोपाल गुरुमैता, धीरज गुरुमैता, लालदेव कामति, विजय कामति एकर अतिरिक्त हमर मौसीश्री वुलवन्ती देवी देलन्हि। जनतब देनिहार सभक हम आभारी छी जे एहेन महात्वपूर्ण विषयकेँ प्रकाशमे लावक लेल हमरा उत्प्रेरित केलैन्ह। हम अपना मने किछु नहि लिखलहुँ, दिवंगत महामानव परिवारक सदस्य सभ जे जनतब देलन्हि ओकरे लिपिवद्ध कयलहुँ। एहि कान्तिकारी महामानवक व्यक्तित्व आ कृतित्वक विषयमे जे किछु गलती-फलती लिखा गेल हुए तकरा पाठक लोकनिसँ करवद्ध प्रार्थना जे माफ करब।

आदरणीय गुरुदेव श्री राजेन्द्र छिट्टान भाट्टावारीकेँ हम नमन, वन्दन आ अभिनन्दन करैत छियैन्ह जे हमरा एहि क्रान्तिकारी लोकनिक कथा सुनबैत रहैत छलाह। किछु महत्वपूर्ण जानकारी श्री चेतलाल भिण्डवार आ स्व. कुलदेव गोइत सेहो देने छलाह। आदरणीय चेतलाल भिण्डवार आ स्व. कुलदेव गोइत सेहो महान स्वतंत्रता सेनानी छलाह। राम लषण सल्हैताक द्वितीय सुपुत्री स्व. महेश्वरी देवी जे हमर माता श्री छलथिन्ह, ओ एहि विषयक जनतब दैत रहैत छलीह। राम लषण सल्हैताक धर्म पत्नी स्व. आनन्दी देवी जे हमर नानी छलीह। ओ एहि सभ घटनाक जानकारी हमरा दयने

छलीह। हमर पिताश्री स्व. राजेश्वर मंगरदैताता सेहो एहि सभ घटनाक आँखिसँ देखल बात बतबैत रहैत छलाह। स्वतंत्रता आन्दोलनमे एहि इलाकाक बहुतो प्रवुद्ध लोकनि भाग लेने छलाह, उत्तमलाल यादव, रसिक लाल यादव, अधिक लाल खेड़वार, जय कृष्ण गुरुमैता आदि।

हम श्री नन्द विलास राय जे शाब्दिक अशुद्धिकेँ दूर करबामे सहयोग कयलनि आ डॉ. उमेश मण्डलजीकेँ जे मुद्रण आ टंकणक कार्य कयलनि, एहि दुनू व्यक्तिक प्रति आभार व्यक्त करैत छी। अस्तु..।

- नारायण यादव

पूर्व प्राचार्य

उ. वि. जयनगर

मो. +91 99390 41116

सल्हैता

अपन देश भारत 15 अगस्त 1947 ई.कैँ अंग्रेजक चंगुलसँ छुटि आजाद भेल। एहि आजादी दियावऽमे भारतक महान सपूत सभक योगदान अभूतपूर्व रहल। कोनो तरहक ऐतिहासिक परिवर्त्तनक पाँछा जन समुदायक सहयोग अपेक्षित रहल अछि। स्वतंत्रता आन्दोलनमे मिथिलांचलक भागिदारी बढ़ि-चढ़ि कैँ रहल। हजारक हजार लोक सभक बलिदानक फल स्वरूप देश आजाद भेल। मिथिलांचलक बहुतो परिवार नश्त-नाबूद भय गेल। एहनो महानुभाव भेलाह जकर कृतित्व इतिहासक पन्नामे लिपिवद्ध नहि भय सकल। जाहिमे गुरुमैता आ सल्हैताक परिवार देश आजाद करयबाक बास्ते अपनो मिट गेल संगहि परिवार कुटुम्ब सेहो वर्वाद भय गेलैक। एहन गुमनाम क्रान्तिकारी व्यक्तित्व आ कृतित्वक वर्णन कयल जा रहल अछि। जे निम्न अछि।

रामलषण सल्हैता

सहरसा जिलान्तर्गत कोसी नदीक ओहिपार सितोहबरहा नामक गाम अछि। ओतय आत्मा सल्हैता आ परमात्मा सल्हैता दू भाई रहैत छलाह। आत्मा सल्हैता अपन परम प्रिय भाई परमात्मा सल्हैतासँ सहमति लय तकरीबन 100-125 गाय चराबक हेतु पश्चिम दिशामे बिदाह भेलाह। गायकैँ चराबक हेतु परती जमीन ढेर रास छल। जंगल सेहो छलैक। गाय सभकैँ जतय चारा भेट जाय ततय जाय लागल। चरबाहा लोकनि गायक पछोर धयने रहैत छल। जखन संध्या होइत छल तखन गाय सभकैँ गोलिया कैँ चरबाहा आ

आत्मा सल्हैताजी गाय दूहि, खेनाइ बना खाइत पीबैत जाइत छलाह। एहि तरहे धीरे-धीरे 100-125 कि.मी. पश्चिम आबि गेलाह। नहरी गाँवक समीप आबि उपयुक्त जगह पाबि ओतय रहबाक निर्णय कयलन्हि। गाय सभक लेल धनगर जंगल भेट गेल। जतय गायकेँ प्रयाप्त चारा भेट जाइत छल।

चरबाहा लोकनि जंगल काटि धूप आ जाड़ सँ बचबाक हेतु एकटा छोट-छीन झोपड़ी बना के रहय लगलाह। किछु दिनक प्रबास सँ सल्हैता जी बड़ प्रभावित भेलाह। गायक लेल आ अपना लेल ई जगह उपयुक्त बुझेलैन। तँए एतय रहबाक मन बनौलैथ। ओहि समयमे नहरीमे पहिनहि सँ रहनिहार ठकाई साहुक सानिध्य प्राप्त भेलैन्ह। ओहि समयमे नहरीक आस-पास नीक चारागाह तँ छलैके साथ-साथ पूरबमे समता आ पश्चिम मे सुगरबे नदी छल। जे अपनो आ मवेशियोक लेल उपयुक्त छल।

नहरीक भौगोलिक स्थितिकेँ देखैत एहन अनुमान अछि जे ई गाम पूर्वमे पैघ गाँव वा बाजार रहल हेतैक जेकर अवशेष वर्तमानमे देखऽमे अबैत छैक। एहेन अनुमान अछि जे मुगल शासन कालमे एहि हिन्दुबहुल गाँवकेँ विध्वंशक दंश झेलऽ पड़ल से बुझना जाइत अछि, जकर अनेको प्रमाण एहि गाँवमे खंडहरक रूपमे अखनो देखल जाइत अछि। गाँवमे गढ़ीक नामसँ एकटा जगह अछि जे कोनो हिन्दु राजाक गढ़ होयबाक बात प्रमाणित करैत अछि। पूर्वमे एहि गढ़ीक खुदाईमे देवक देव महादेव शिव शंकर भगवानक संगमरमरक अद्भूत आ अतुलनीय शिव लींग मिलल छल जे वर्तमानमे स्व. कमलनारायण सल्हैताक दरबाजापर अवस्थित मन्दिरमे स्थापित छथि। एहि गढ़ीक अलावा 2-3 टा आओर गढ़ी गाँवमे अलग-अलग जगहमे खंडहरक रूपमे देखल जा सकैत अछि साथहि एखनो अपना पूर्ण अस्तित्वमे राजाजी पोखैर ऐतिहासिक

मान्यताक साथ देखल जा सकैत अछि। ई सभ प्रमाण थीक जे नहरी पूर्वमे एकटा साधन-सम्पन्न हिन्दुवहुल गाँव रहल छल, कदाचित् ऐह सभ स्थितिमे संभावनाकेँ तारैत आत्मा सल्हैताकेँ ई गाम वासो-वासक लेल उपयुक्त बुझना गेलैक। अनुमान ईहो छै जे आत्मा बाबू अपन सहगोत्री सभकेँ मार्गदर्शित आ उत्साहित कऽ के नहरीक उजड़ल गामकेँ पुन: स्थापित आ पुर्ननिर्माण कऽ एकटा बसो-बासक लायक बनेलखिन।

समय बितैत गेल। साथ-साथ अधिक गायक कारणेँ फसलक नुकसान देखि ठकाई साहुक आग्रह पर अपन मूल निवास पुरना शिव मंदिर सँ पूरब आ गुरुमैता टोलासँ पश्चिममे स्थापित कयलन्हि। जे बाद मे सल्हैता जीक स्थायी निवास स्थान भय गेल। एकर अगल-बगल सैकड़ो एकड़ जमीन खाली पड़ती पड़ल छल। जेकरा ऊपर केकरो अधिपत्य नहि छलैक। ओहि परती पड़ल जमीन केँ उपजाऊ बना कय अपना अधीन कयलन्हि। आ नीक जकाँ खेती-बाड़ी करय लगलाह।

समय बितैत गेल आत्मा सल्हैता जीकेँ दूध, घी, बछड़ा आ बाछी सँ आमदनी बढ़य लगलैन जे सल्हैता जीकेँ मजबूती प्रदान केलकैन्हि। किछु दिनक बाद आत्मा सल्हैता जखन अपन मूल निवास स्थान सितोहर बरहा तरफ मुखातीव नहि भेलाह। तखन हिनकर बड़ भाई परमात्मा सल्हैता खोजैत-खोजैत नहरी पहुँचलाह। छोट भाई आत्मा सल्हैता केँ वापस सितोहर बरहा लऽ जयबाक लेल आग्रह करय लगलाह मुदा ओ वापस होयबाक लेल तैयार नहि भेलाह। कारोबार बहुत फैल चुकल छल। अपन आमदनीसँ बहुत रास सम्पतिक अर्जन कय चुकल छलाह। तँए छोड़ि कय चलि जेनाई ठीक नहि बुझना जाइत छलैक। धन सम्पतिक मोह बेसी भय गेलैन्ह। मोह भऽ जेनाई स्वाभाविके छल। बड़का भाई परमात्मा

सल्हैता वापस लय जेबाक जिद्द पर अरि गेलाह। तखन आत्मा सल्हैता सभ किछु छोड़ि संयास लेबाक लेल तैयार भय गेलाह। तखन दुनू भाई मे समझौता भेल जे बड़का भाई सितोहर बरहा आ छोटका भाई नहरी मे रहथि। दुनू एक दोसर कैँ सब तरहे मदद करथि। दुनू भाई मे भ्रातृत्वक भावना जागृत होइत रहल। बहुत दिन धरि दुनू भाईक परिवारक बीच आन-जान, खोज-खबर होइत रहल। दुनू दियादमे केश कटौनाई बाला रिति-रिबाज बहुत दिन धरि चलैत रहल। ओहि समयमे नहरी सँ सितोहर बरहाक दूरी 90-100 किलोमीटरक लगभग छल। बीच मे जंगल आ बहुत नदी नाला छल। जखन समय मिलैत छलैक तखन दुनू भाई खुद वा कोनो संबदियाक द्वारा एक-दोसराक हाल-चाल लैत रहैत छल। समय बितैत गेल। नहरीये मे आत्मा सल्हैताक बिबाह-शादी भेलैक। किछु दिनक बाद आत्मा सल्हैताक ओतय एकटा बालकक जन्म भेल। बालकक नाम रघु सल्हैता राखल गेल। रघु सल्हैता संस्कारी बालक छल। सल्हैता यादव वर्गक टाइटिल थिक। यादवक अनेक प्रभेद अछि जेना- घोषिन, कन्नोजझिया, गड़ेरी, मझरोठ, मझरोट, दहियार, बड़गुआर, देवहरि आदि।

घोषिन यादवक सेहो तकरीवन 311 प्रभेद अछि। जहिमे प्रचलित निम्न उप भेद अछि। एक टाइटिल बालाकैँ ओहि टाइटिल मे विवाह-शादी नहि होइत अछि। यादवक गोत्र अत्री अछि। आ मूल निम्न अछि-

(1.) अरगरिया	(5.) अभिरान
(2.) आब	(6.) आयता
(3.) अन्धकुलिया	(7.) अनकार
(4.) अभरैत	(8.) अपैता

(9.) आहुक
(10.) अन्नोदवार
(11.) उपन्दौक
(12.) उपरझिया
(13.) उग्रैत
(14.) उर्ध्ववार
(15.) एरुमुनिया
(16.) अभिर
(17.) अर्जन्या
(18.) अत्रीमुखि
(19.) अभिनन्दौक
(20.) अरिजितिया
(21.) कैहब (कहब)
(22.) कुसियैत
(23.) कुसमैता
(24.) करनैता
(25.) कृतकार
(26.) कुमरसनियां
(27.) काजरि
(28.) कोयार
(29.) करूवार
(30.) कृष्णवार
(31.) कोसरसिया
(32.) कुलसी
(33.) कणक
(34.) कौरबिया
(35.) कोहुधिनियां
(36.) कुकुहवेदा
(37.) कलिवार
(38.) कहबैक
(39.) किंदवार
(40.) कैवार
(41.) कापर
(42.) कापरी
(43.) कौड़गिया
(44.) कंकमान
(45.) कोलियार
(46.) कन्ना
(47.) खिरहरि
(48.) खड़गा
(49.) खमहान
(50.) खेड़वार
(51.) खैरवान
(52.) खुतहरी

(53.) गोहिवार
(54.) गोहितमान
(55.) गोठिया
(56.) गोड़हान
(57.) गृह्यवार
(58.) गाडार
(59.) गोधनधारी
(60.) गोपुरहारी
(61.) गोरही
(62.) गोवाला
(63.) गौड़
(64.) गोला
(65.) गोवही
(66.) गायआनी
(67.) गोत्राहरी
(68.) गोवर्धनियां
(69.) गोपराजी
(70.) गात्रवान
(71.) गोवली
(72.) गोयल
(73.) गायडढ़िया
(74.) गोपालदिया
(75.) गोपक
(76.) गोपति
(77.) गणवरिया
(78.) गोकुलिया
(79.) गोईत[1]
(80.) गुरुमैता
(81.) घीमरिया
(82.) घाटी
(83.) घसियार
(84.) घोषी
(85.) घोषाल
(86.) घासी
(87.) घीभरिया
(88.) घोषाल
(89.) चुनियां
(90.) चन्द्रमान
(91.) चारूहेवार
(92.) चारूदेष्णी
(93.) चौरअनियां
(94.) चौड़वार

---

[1] **(बहुकुलिया, खुरा, विसनपुरिया, ग्वासारे, छजनैत, मछड़िया और सगहा)**

(95.) चतरैत (चिपरैत)
(96.) चाङ
(97.) चौधरी
(98.) छिट्टान
(99.) जमुयैत
(100.) झखरैत
(101.) टरैत
(102.) टरटरी
(103.) टिकैत
(104.) ठढ़िया
(105.) डरखरिया
(106.) डागुर
(107.) तेथवार
(108.) तपसी
(109.) तरफदार
(110.) दरघैत
(111.) देउरी
(112.) देवहरि
(113.) दुधधारी
(114.) देवक्षत्र
(115.) देवमिढ़िया
(116.) धनखोटी
(117.) धनगार
(118.) धनकुलिया
(119.) धोकरवार
(120.) धीमान्
(121.) धुरझार
(122.) नरसरिया
(123.) नेवार
(124.) नकहाना
(125.) नाहव
(126.) नान
(127.) नन्दनवार
(128.) निजपुरिया
(129.) नंदात्मज
(130.) नन्दहरि
(131.) नामडारी
(132.) नन्दगोपा
(133.) नाङ
(134.) पुनिया
(135.) पुनसिया
(136.) परसैला
(137.) पघैया
(138.) पालुई

(139.) पुरियाही
(140.) पोआली
(141.) पौरिक
(142.) परिपगी
(143.) पाईन
(144.) पुतियैत
(145.) पाल
(146.) पौलिक
(147.) पुरजितिया
(148.) परजनियां
(149.) परपरि
(150.) पांडे
(151.) फरकार
(152.) वनरैत
(153.) बड़वरिया
(154.) वहड़रवेर
(155.) विराजी
(156.) वनेवार
(157.) बुधनगरिया
(158.) वनवरिया
(159.) वरसनियां
(160.) वर्दिया
(161.) वेनुवार
(162.) व्रजमान
(163.) वसुधार
(164.) विचारी
(165.) व्रजकुलिया
(166.) बाध
(167.) वैदा
(168.) वटहा
(169.) वरहा
(170.) वहुकुलिया
(171.) बाखुलिया
(172.) विछाली
(173.) वडियार
(174.) वृष्णि
(175.) वृहदमान
(176.) वृषवीर
(177.) वर्धिनियां
(178.) वहियार
(179.) वीरसिनीयां
(180.) विरमान
(181.) वरियैत
(182.) वृजनीवान

(183.) बृषमान
(184.) बधवान
(185.) वणियैत
(186.) वगुई
(187.) बर्मन
(188.) बनैता
(189.) भगत
(190.) भदिसवार
(191.) भुड़ेर
(192.) भुसुकलिया
(193.) भुआ
(194.) भोड
(195.) भट्टारक
(196.) भवान
(197.) भिण्डवार[2]
(198.) भरमैता
(भोरमोहिता
(199.) भंडारी
(200.) भनूमान
(201.) भजमान
(202.) भद्रचारी
(203.) भेडवार
(204.) मारूतमान
(205.) मैरता
(206.) मांझी
(207.) मुखिया
(208.) मरीक
(209.) मटियैत
(210.) मसैता
(211.) मघैया
(212.) मुड़िया
(213.) महरान
(214.) मंगरदैता
(215.) मंघरैत
(216.) मनुकुड़िया
(217.) माल
(218.) मखुलिया
(219.) मधुमान
(220.) महामरीक
(221.) महाभोजी
(222.) मुसियैत
(223.) मण्डल
(224.) मधुकुरिया

[2] **दू उपभेद अछि- अधिकारी आ महतो**

(225.) महतो
(226.) मुरारी
(227.) मोलनाहा
(228.) माधव
(229.) मड़र
(230.) महिकुलिया
(231.) माउड
(232.) महीमान
(233.) मइयर
(234.) मुरिया
(235.) मसात
(236.) मरबैता
(237.) महत्मान
(238.) मुंगिया
(239.) यदुकुसिया
(240.) यदुराज
(241.) यादुर
(242.) यमवार
(243.) राव
(244.) रावत
(245.) राजन्या
(246.) रोहिता
(247.) रान
(248.) रूद्रवार
(249.) रूद्रपुरिया
(250.) राभ
(251.) रेधान
(252.) लिजपुरिया[3]
(253.) लंगुनैत
(254.) लहोटिया
(255.) शुरवान
(256.) सुनरैत
(257.) सुन्दरकुलिया
(258.) सरहान
(259.) सिहपलिया
(260.) सतरा
(261.) सढ़ौत
(262.) सात्वत
(263.) सादा
(264.) सतकुलिया
(265.) सतवोलिया
(266.) सादेष्णी
(267.) शाशा

[3] **निजपुरिया**

(268.) सेन
(269.) सरसैत
(270.) सतपहरिया
(271.) सकैत
(272.) शीलधरिया
(273.) सिंहमनियां
(274.) सुनरैत
(275.) सुमरैत
(276.) साहुनायक
(277.) सुभान
(278.) शमिमान
(279.) सुनौत
(280.) सात्यिकी
(281.) समज्ञमान
(282.) सामवेदिया
(283.) सत्यकार
(284.) सत्यजितवार
(285.) सहरा
(286.) समाजी
(287.) शाक
(288.) श्रीमान्
(289.) सहभोजिया
(290.) सोमकुलिया
(291.) श्रृंगवार
(292.) सावुई
(293.) सरमेत
(294.) सुभद्रमान
(295.) सहनोगिया
(296.) सल्हैता
(297.) सिंहमैत
(298.) सुरैत
(299.) हनदार
(300.) हलदार
(301.) हरियार
(302.) हाइक
(303.) हाइत
(304.) हाभि
(305.) हजरा
(306.) हहैवान
(307.) हृदोक
(308.) हर्षवान
(309.) हसैता
(310.) हनवरिया

आत्मा सल्हैताक एक मात्र पुत्र रघु सल्हैता अपन पिताक पद्चिन्हपर चलय लगलाह। पिताक गोपालन, कृषि कार्यमे मदद करैत रहलाह। आत्मा सल्हैता आओर रघु सल्हैताक आमदनी गाय, बैल, बाछा बाछीक बिक्री सँ होमय लागल। ओ दुनू बापूत बड़ उद्यमी छलाह। आमदनी मे बृद्धि लगातार जारी रहल। एहि तरहे सल्हैताजी एकटा मजबूत गोपालक आओर कुशल किसानक रूपमे स्थापित भेलाह। रघु सल्हैता नहरीमे जन्मल पहिल सल्हैता छलाह। नहरीमे रघु सल्हैता, सल्हैता परिवारक बुनियादकेँ मजबूती प्रदान कयलैन्ह। विष्णु पुरानक पहिल पांति छैक जे-

यर्दोवंशं नर श्रृत्वा सर्व पापै प्रमुच्यते।

यत्रावतीर्ण कृष्णाख्यं परं ब्रह्म निराकृति।।

कहबियो छैक जे गाय, गंगा आ गायत्री हिन्दू संस्कृतिक मूल मंत्र अछि। गायक सेवासँ हमर बिकासे टा नहि होइत अछि बरन ईश्वरसँ निकटता बढ़बैक एकटा जरिया अछि। श्री कृष्ण गायक पालन करैत छलाह, गायक दूध पीबैत छलाह, बछड़ाक संग खेलैत छलाह। यदुवंश मे जन्म लेनहार यदुवंशी गौक सेवा कयनाई अपन धर्म बुझैत छल।

गौ पालन कय रघु सल्हैता एहि कथन केँ सत्य साबित कय देलैन्ह। समयो हिनके अनुकूल चलैत छल। गोपालनक संगहि कृषि कार्यक लेल रघु सल्हैता अपन किछु सहयोगी केँ संगठित कय लेने रहैथ। किछु दिनक बाद रघु सल्हैताकेँ दू पुत्र रत्नक प्राप्ति भेलैन्ह। एकक नाम मुसहरू सल्हैता आ दोसरक नाम फुदी सल्हैता राखल गेल। रघु सल्हैताक संग्रहण शक्तिक प्रभाव एहि दुनू नेनापर पड़लन्हि। ई दुनू भाई अपन धन-बल केँ द्रुत गतिसँ बढ़ौलन्हि। एहि धन बलक प्रभाव रियासत तक पहुँच गेल। सल्हैता जी केँ पास

एतेक जमीन भय गेलैक, जे दरभंगा महाराजाकेँ खटकऽ लगलैक। महाराजा सोचय लागल कि एहि रैयतक पास एतेक जमीन गैर कानूनी अछि। सल्हैता जी एहि धन सम्पतिक अर्जन अपन अथक परिश्रम आ अपन बाहुवल सँ कयने छलाह। सल्हैता जीक जमीन केँ हस्तान्तरित करबाक जुगाड़मे लागि गेल। माल गुजारी नेनाई बन्द कय देलक। महाराजा ई सोचलक जे मालगुजारी नहि देबाक अभियोगमे सल्हैता जीक जमीनकेँ नीलाम कय हस्तान्तरित कय लेब। ई एकटा बिकट स्थिति छल। सल्हैताजी अदालतक दरबाजा खटखटबय लगलाह।

ओहि समय मे बिहार बंगालसँ अलग नहि भेल छल। एतुका जिला मुख्यालय दरभंगा छल। ऐनामे अदालती कार्यक लेल दूर जिलामे हाजिरी लगेनाई मुश्किल कार्य छल। जँ इरादा मजबूत रहत तँ पत्थरो केँ तोड़ि सड़क बनायल जा सकैत अछि। मुकदमामे सल्हैता जी काफी परेशान भय गेल छलाह।

मुसहरू सल्हैता केँ तीन पुत्र भेलैन्ह। गुदर सल्हैता बच्चा लाल सल्हैता और बाबूलाल सल्हैता। तीनू बालकक परबरिश बेहतर ढंगसँ भेल। ओहि समयक हिसाब सँ तीनू बालकक शिक्षा-दीक्षा नीके ढंगसँ कराओल गेल। बालक सभ बालिग भेलाह।

बाप-दादाक कार्यक भार अपना उपर मे लेलैथ। मुसहरू सल्हैता अदालती कार्य गुदर सल्हैताकेँ दय देलथिन्ह। गुदर सल्हैताक सहयोग हिनक सहोदर बच्चू सल्हैता देबय लगलन्हि। बच्चू सल्हैता अदालती काममे एतेक निपुण भय गेलाह कि हुनक बुधियारीपर लोक हिनका असेश्वरक उपाधि दय देलकैन्ह। ओहि समयमे असेश्वर एकटा नीक अधिवक्ताक हैसियत मे रहैत छल। गुदर सल्हैता आ बच्चू सल्हैता बौद्धिक कार्यमे सिद्धहस्त भय गेल छलाह। बाबू लाल सल्हैता अपन पैत्रिक काम खेती गृहस्थी केँ

सम्हारय लगलाह। तीनू भैयारीमे एहेन बढ़िया तालमेल छल कि सभ कार्य जेना अदालती, समाजिक या पारिवारिक कार्य हो। सभ आराम सँ निबटा लैत छलाह। गुदर सल्हैता अपन जेनरेशनक नायक छलाह। हिनकर बुद्धि आ विवेकक लोहा सभ मानैत छल। ओहि समयक रियासत कर्त्ता सेहो हिनका महत्व देबय लगलन्हि। एकर एकटा उदाहरण अछि- झहुरी रियासतक राजा सांगा आ बाबूबरही रियासतक राजा बाबू साहेब मे वर्चश्वक लड़ाई बाँझि गेल छल। जाहिमे सांगा साहेबक पक्षकार छल परसाहीक गोईत जी आओर एकम्माक भिण्डवार जी। जखन कि बाबू साहेबक तरफ सँ प्रतिनिधित्वक जबावदेही गुदरे सल्हैता निभा रहल छलाह। पंचैतीक जगह झांझपट्टी मे राखल गेल। इलाकाक लोक सभ एहि पंचैतीकेँ देखबाक-सुनबाक लेल जमा भेल छलाह। एहि पंचायत मे बाबूबरही रियासतक राजाक पक्ष गुदर बाबू एहि कुशलताक साथ रखलन्हि जे इलाकाक लोक अचंभित भय गेल। आ फैसला बाबूबरही रियासतक राजा बाबू साहेबक पक्षमे भेलैन्ह। इलाकाक लोक गुदर बाबूक भूरि-भूरि प्रसंशा करय लगललन्हि। बाबू साहेब एतेक खुश भेलाह जे गुदर बाबू के तहसिलदार घोषित कय देलैन्ह। लेकिन किछु दिन तहसिलदारी कयलाक उपरान्त गुदर बाबू केँ ई भान भेलैन्ह जे तहसिलदार हिनक आन, बान और शानक खिलाफ अछि। एहि सँ हमर व्यक्तित्व आ गरीमा धूमिल होयत। ई सोचि ओ एहि पद सँ त्याग-पत्र दय देलैन्ह। आचार्य श्री राम शर्माक कथन छन्हि कि संसारक बाजार मे पुरुषार्थक सिक्का चलैत अछि। गुदर बाबू केँ जेहन मे पुरुषार्थ सँ बढ़ि दोसर चीज नहि छल। परिवार, समाज आओर राज्यक बीच गुदर बाबू आदरणीय छलाह। ओमहर दरभंगा महाराजा सँ जे अदालती मुकदमा छल से कलकत्ता उच्चन्यायालयमे पहुँच गेल। ओहि समय मे बिहार बंगालक हिस्सा छल। फैसला

किछु भय सकैत छल। आशा, निराशाक भाव परिवार मे फैलल छल। क्रान्तिकारी इरादाक संग गुदर बाबू अपन सभ भाईक साथ निकट परिस्थिति सँ जुइझ रहल छलाह।

एहेन परिस्थिति मे गुदर बाबू कैँ एकटा वैकल्पिक व्यवस्था करबाक जरूरत महसूस भेलैन्ह। सोचलाह जँ केश हारि जाइत छी तँ नहरीक जमीन दरभंगा महाराजा लय लेत। ताहि हेतु परिवारक हितमे 150 बीघा जमीन नेपालक साहपुरमे खरीद कयलन्हि।

केश हारलाक बाद जमीन नीलाम भय जाइत तँ बाल-बच्चा संग नेपाल चलि जायब आ ओतहि बसि जायब। ओहि समयमे सल्हैता जीक लहना नेपालमे चलि रहल छल। अन्न आ द्रब्यक लेन-देन नेपालक लोक सभसँ चलि रहल छलैन्ह। एहि लेल हिनक रूतबा जमल छल। ओहि समयमे कलकत्ता उच्च न्यायालय मे केश चलि रहल छल। केश अन्तिम चरणमे छल। बड़ कसम-कसक स्थिति बनल छल। डरक माहौल छल। आखिर तक लड़बाक इच्छा शक्ति धारण कयने छलाह।

सल्हैता परिवार पूर्वहि सँ आस्तिक छलाह। ईश्वरक प्रति हिनका सभक अगाध प्रेम आ श्रद्धा छलन्हि। एहि वातावरणमे सफलताक माहौल बनयबाक वास्ते पूजा-पाठ, होम-जाप, हवन कय रहल छलाह। फैसलाक इन्तजार छल। दुनू पक्षसँ बहस भय गेल छल। परिस्थित अनुकूल आ प्रतिकुल दिशामे चलि रहल छल। सभ डरल-सहमल छल, मुदा गुदर बाबू आशान्वित छलाह। हुनका 12 आना यकिन छलन्हि जे अपन परिश्रमक फल जरूर भेटत। कहाबत छैक ईश्वर ओकरे मदद करैत अछि जे पुरुषार्थ देखबैत छैथ। God help those who help them Selves. सरकारक तरफ सँ मजिस्ट्रेट बहाल भेल छल। ओ हाकीम सभ सल्हैताजीक जमीनक पैमाइश करा ओकर तहकीकात करैत छल।

सल्हैताजीक जमीनक बीच दोसरो छोट-छीन रैयतक जमीन पड़ैत छल। तहकीकातक दरम्यान साहुजी और ठाकुरजी अपन जमीनकेँ अपन नहि सल्हैताजीक जमीन बता देलक। सभ अपन जमीनकेँ राजाक डर सँ आ केशक डर सँ नहि अपनौलक। ओहि तहकिकातक समय मात्र एक किसान जे लहेरी छल; ओ अपना जमीनकेँ अप्पन स्वीकार कयलक।

एहि सभक बाबजूद ओ घड़ी आबि गेल जकर बहुत सालसँ इन्तजार छल। एहि बीच एकटा चमत्कारी घटना घटल। ओहि समय मे अदालत सँ एक महत्वपूर्ण कागजातक मांग कयल गेल। यैह कागज फैसला हेतु अहम सबूत बनत। ओहि कागजक खोजबीन होमय लागल। सपरिवार ब्रह्म बाबाक पूजा-अर्चना करय लगलाह। ब्रह्म बाबाक असीम कृपासँ ओ कागज अनायास घरमे भेटि गेल। ओहि कागज के कोर्टमे जमा कराओल गेल। फैसला सल्हैता जीक पक्षमे आयल। सभक मन प्रफ्फुलित भय गेल। हर्षोल्लास मे भजन, कीर्त्तन, अष्टयाम होयमय लागल।

कोनो राजाकेँ रैयतक समक्ष ई पहिल हार छल। विदित अछि एहि फैसलाक बाद गुदर सल्हैता नहि वरन पूरा सल्हैता परिवार ऐतिहासिक महत्वकेँ प्राप्त कयलक। केशक गबाही आओर अदालती फैसलाक अनुरूप जतेक जमीनपर क्लेम भेल छल ओहि मे किछु अन्य रैयतक जमीन छल। जे राजाक डर आ सल्हैताजी सँ द्वेषक कारण पैमाइश आओर गबाहीमे सल्हैताजीकेँ बतौने छल। ओहो जमीनक अधिकार फैसला मे सल्हैता जी कय दय देलक। सल्हैताजी ओहि जमीन पर अपन अधिपत्य कायम कयलक। गुदर बाबू एतबे पर नहि रूकलाह। एहि नमहर जद्दोजहद मे गुदर बाबूक सम्मान पर जे ठेंस पहुँचल तकरा लेल ओ दरभंगा महाराजाक ऊपर मान हानिक मुकदमा केलन्हि। दरभंगा महाराजाक ड्योढ़ीक

नीलामी हेतु कलकत्ता हाइकोर्ट मे केश केलन्हि। केश बहुत दिन धरि चलल। गुदर बाबू अकाट्य सबूत, निपुणता, विवेक, हौसला आओर विश्वासक वजहसँ एहि केशक निर्णय हिनकहि पक्षमे अयबाक संभावना बनल। ई देखि दरभंगा महाराजा अचंभित भय गेलाह।

अदालतक अवलहेलना ओ नहि कय सकैत छलाह। तँए एकटा युक्ति निकाललैथ जे कियैक नहि सल्हैता जी सँ दोस्ती कय लेल जाए। 'बिनु भय होत न प्रीत' वाली उक्ति सार्थक भेल।

दरभंगा महाराजा अपन विश्वस्त सूत्रक माध्यमसँ गुदर बाबूकेँ दोस्तीक पैगाम भेजलन्हि। गुदर बाबू अपन परिवारक सभ सदस्य सँ विचार-विमर्श कय दरभंगा महाराजासँ दोस्ती स्वीकार करबाक सहमति देलन्हि।

एकटा राजा अपना रैयतक सामने झुकि रहल छल। एकटा रैयतकेँ अपन दोस्त आ अपना समकक्ष मानबाक हेतु विवश छल। गुदर बाबू अपन विशाल हृदयक परिचय देलैन्ह। दरभंगा महाराजासँ दोस्ती स्वीकार कयलन्हि। आओर राज्यक एकटा जिम्मेदार नागरिक होयबाक फर्ज अदा कयलन्हि। राजाक अपमान राज्यक अपमानक समान होइत अछि। दोस्तीक साथ-साथ केशमे सुलह सेहो कयलन्हि।

एहि हेतु महाराजा आ गुदर बाबू कलकत्ता हाईकोर्टमे सुलह नामा लगौलथि। ड्योढ़ीक निलामी रूकि गेल। महाराजा अति प्रसन्न मनसँ हिनका किछु उपहार देबाक प्रयास कयलन्हि। गुदर बाबूक जमीनक मालगुजारी माफ करबाक प्रस्ताव महाराजा भेजलन्हि। प्रस्ताव तँ बड़ लुभावना छल आओर घातक सेहो। गुदर बाबू समझदार आओर (अदालती जानकारीमे परंगत छलाह ओ सोचलन्हि जाहि मुद्दा लय हम मुकदमा जितलौं वैह मालगुजारी

सरकारकेँ नहि देब, तँ एक-न-एक दिन हमर जमीन निलाम भय जायत। मालगुजारी माफ कय महाराजा कोनो षड्यंत्र ने रचि दीयै। गुदर बाबू सोचलनि जँ मालगुजारी नहि अदा करब तँ जमीन जोतबाक हक हमरा सँ छिना जा सकैत अछि। ओ न्याय प्रिय छलाह। तँए ओ मालगुजारी माफक प्रस्ताव स्वीकार नहि केलन्हि।

एहि प्रकारे गुदर बाबू अपन समझदारीक नमूना पेश केलन्हि। मुदा दरभंगा महाराजा एतेक प्रफ्फुलित आ एहसानमन्द छलाह कि गुदर बाबूकेँ कोनो पैघ सँ पैघ उपहार देने बिना हुनका चैन नहि मिल सकैत छलन्हि। एहि हेतु महाराजा सल्हैता जीक विशाल भूखण्डपर नाम मात्र पैसाक मालगुजारी अदा करबाक पट्टा बना देलकैन। एहि प्रस्तावकेँ गुदर बाबू मानि लेलकैन।

एहि प्रकार आइ धरि ओहि परम्पराक अनुरूप सल्हैता लोकनिकक अपन जमीनपर दोसर रैयतक मुकाबला आंशिक मालगुजारी अदा करबाक दस्तूर केँ निभा रहल छैन्ह। ई नमहर समयावधि छल जाहिमे गुदर सल्हैताक सहोदर भाई बच्चू सल्हैता, बाबू लाल सल्हैता आ चचेरा भाई लेल्हाई सल्हैता आओर मनरूपी सल्हैता एहि परोपट्टामे सभसँ पैघ धनिकमे मानल जाय लगलाह। ओहि समयमे सल्हैता परिवार उत्कर्ष पर छल। धन धान्य मे उत्तरोत्तर वृद्धि होइत रहल। गोपालन, कृषि कार्य आ लहनाक कारोबार चरम पर छल। ओहि समय मे सल्हैता परिवार लेनदारकेँ मोहर तौल कय दैत आ लैत छलाह। ओहि समय मे चारि-पाँच साल तक अकाल पड़ि जाइत छलैक। एहेन परिस्थितिमे सल्हैता परिवार अनाज और रूपया पैसाक लेल जरूरतमन्दक बास्ते एकटा माकूल ठिकाना छल। धीरे-धीरे परिवारक संख्या बढ़य लागल। सभ आपसमे बाँटि-चुटि लेलक। लेकिन आपसमे सामंजस्य और आदरक भाव बरकरार अछि। अंग्रेज सरकार सल्हैता जीकेँ लोहा मानैत

छल। अंग्रेजक जुल्म चरम पर छल। गाम-गाममे ओकर मुँहलगुआ चाटूकार सभ छल। जे मालगुजारी वसुल करबामे सहयोग करैत छल। ओ सभ कर वसुल करयमे अंग्रेजक देवान आ ओकर मुलाजिम केँ मदद करैत छल। अंग्रेजक मुलाजिम बड़ निर्दयता सँ मालगुजारी वसुल करैत छल। जे रैयत समयसँ मालगुजारी नहि दैत छल, ओकरा उपर नाना प्रकारक अत्याचार करैत छल। सालक साल अकाल पड़ि जाइत छलैक। दुनू शामक भोजन नदारत भय जाइत छल। रैयत सभसँ माल-जाल जकाँ व्यवहार करैत छल। ओकरा सँ कहारी करायल जाइत छल। ओकरा रौद मे मुर्गा बनायल जाइत छल।

गाम-गाममे कचहरी छल। कचहरी लग पोखैर खुनाओल गेल छलैक ओहि पोखैरमे जोंक पोसल जाइत छल। जे रैयत समय पर मालगुजारी नहि अदा करैत छल तकरा ओहि पोखैरमे दय जोंक सँ खून पियाबैत छल। कतेक रैयत अंग्रेजक अत्याचारसँ जमीन-जत्था आ घर-दुआरि छोड़ि भागि जाइत छलाह। बहुत रास किसानक जमीन निलाम कय लैत छल। आ ओकरा अपराधकेँ बाबू लाल सल्हैताक सुपुत्र रामलषण सल्हैता विरोध करय लगलाह। गुदर बाबू आब बुजुर्ग भऽ गेल छलाह। हुनकर सुपुत्र लालजी सल्हैता आ रामजी सल्हैता, मांझिल भाईक पुत्र जिन्त्री सल्हैता आ मिन्त्री सल्हैता औओर छोट भाई जे कि हुनकर आज्ञाकारी छल, हुनक पुत्र रामलषण सल्हैता, रामकृष्ण सल्हैता आ जयकृष्ण सल्हैता सभकेँ समुचित शिक्षित केलाक उपरान्त ई परखऽ मे लागल छलाह जे एहि सातोमे सँ के भऽ सकैत अछि जे हमरा पारिवारिक दायित्वक उच्च आदर्शक निर्वहन कऽ सकैत अछि। सभक क्रिया-कलाप आ कार्य-शैलीपर ओ गहनतम अध्ययन कऽ अपन नायकत्वक दायित्व ओ अपन छोट भाईक बड़का सुपुत्र आ अपन लाडला रामलषण

सल्हैताकेँ देलखिन्ह। गुदरबाबू अपन भातिज रामलषण सल्हैतासँ बड़ खुश छलाह। रामलषण बाबू सेहो गुदरबाबूकेँ अपन आदर्श मानैत छलाह। एहि तरहेँ धन-धान्यसँ भरल-पुरल घरमे एकटा सुलझल नेतृत्वकर्ताक उद्भव भऽ रहल छलैक जे गाम आ समाजेमे नहि अपितु इलाका भरिमे यश आ प्रशंसाक पात्र भऽ रहल छलाह। रामलषण बाबू वेहद स्वतंत्र ख्याल रखनिहार, निर्भिक आ न्यायप्रिय छलाह। लोभ-लालच तँ हुनकामे नाम मात्रो नहि छलैन्ह।

बाबू लाल सल्हैताकेँ तीन पुत्र, पहिल रामलषण सल्हैता, दोसर राम कृष्ण सल्हैता आ तेसर जय कृष्ण सल्हैता छल। सल्हैताक वंशावली द्रष्टव्य:-

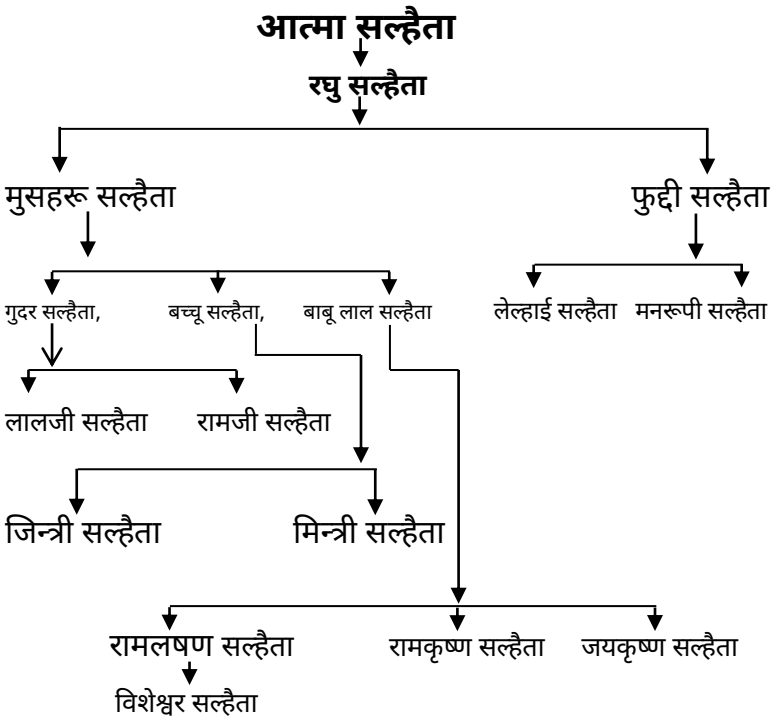

ओहि समय मे महान स्वंत्रता सेनानी रामनारायण गुरुमैताक निधन भय गेल छल। महान क्रान्तिकारी लोकनिक नेतृत्व कर्त्ताक निधनक कारणेँ आब एहि संगठनक नेतृत्व कर्त्ता सल्हैता परिवारक देदिप्यमान नक्षत्र रामलषण सल्हैता भेलाह।

रामलषण बाबू जमींदारक साथ-साथ विद्वान, कर्मठ, साहसी, सुयोग्य, स्पष्टवक्ता आ हिन्दी भाषी छलाह। आब रामलषण बाबूक नेतृत्व मे देव नारायण गुरुमैता, सूर्यनारायण सिंह, सुवोध झा, गुलावी सोनार, यमूना सिंह, जिलेवी खड़गाह आ रामलषण बाबूक छोट भाई राम कृष्ण सल्हैता आ जय कृष्ण सल्हैता आन्दोलन केँ सक्रिय बनयबा मे सहयोग करय लगलाह।

बाबू लाल सल्हैताक जेष्ट सुपुत्र रामलषण सल्हैता आन्दोलनक मोर्चा सम्हारलथि। दरभंगा महाराजा जे अंग्रेजक अधीन छल। उपर्युक्त आन्दोलनकारी जतय-ततय अंग्रेजी शासनक विरोधमे जनता केँ जागरूक बनबैत रहल। अंग्रेजक फौज जाहि रास्तासँ जाथि ओहि रास्तामे पुल-पुलियाकेँ तोड़ि दैथ। ऑफिसक काम-काज केँ बाधित करथि। अंग्रेज भारत छोड़ोक अभियान चलवथि। जाहि लेल अंग्रेजी फौज हिनका सभकेँ नजैरपर रखने रहैत छल। रामलषण सल्हैता के एकटा बड़ पैघ हाथी छल। तकरीवन ओकर लम्बाई 10 हाथ छल। ओकरा पैघ-पैघ दाँत छलैक। हाथी देशभक्त, स्वामी भक्त आ वफादार छल। सवारीक लेल रामलषण बाबू एहि हाथीक प्रयोग करैत छलाह।

एक दिन रामलषण बाबूक दोसर बेटी जे तकरीवन अढ़ाइ (2 ½) सालक छलीह। संध्याक समय ओ बच्ची हबेली सँ निकलि हाथीक घर चलि गेलीह। हाथी बान्हल छल। हाथी बच्ची केँ देखलक, ओ पहिचाइन लेलक जे ई तँ हमरा मालीकक बेटी छथि। हाथी अपना सूढ़सँ बच्चीकेँ उठा लेलक आ झूलवय लागल। जाड़ाक मौसम छल। बच्ची आस पाबि सूति रहलीह। हाथी बैस रहल आ बच्चीकेँ दुनू जाँघक बीचमे राखि सूढ़सँ

झाँपि देलक। हाथीक साया मे बच्ची सुतल रहलीह। जहिना माय अपना संतानक पालन-पोषण करैत अछि तहिना हाथी बच्चीक रक्षार्थ सूढ़सँ झँपने छल। हाथीमे दैवी शक्ति छलैक। बच्ची हाथीक सायामे सुतल रहलीह।

जखन मुनहारि साँझ भेलैक तखन बच्चीक खोज-पुछारि होमय लागल। बच्चीक माय-बाप घरक सभ सदस्य, दर-दियाद, नौकर-चाकर, अड़ोसी-पड़ोसी, बाड़ी-झाड़ी, पोखैर-इनार आ जतए-ततए खोजए लागल। कतौ बच्चीक अता-पता नहि लागल। हबेलीक अन्दर कन्ना-रोहट होमय लागल।

मुन्हारि साँझ भय गेल छल। ई आशंका होमय लागल जे कहीं कोनो जानवर तँ ने उठा कऽ लय गेल। किछु आदमी आमक गाछीमे खोजबाक हेतु गेलाह। मुदा कतौ नहि भेटल। हारि-थाकि निराश मने दरबाजा पर सभ कियो जमा भऽ गेल। सबहक मुँहसँ अपसोश शब्द निकलए लागल। साँझ-वाती देमय लेल दीप, लालटेन आ डिबिया जलबय लागल। ओहि समयमे आजुक जकाँ बिजलीक व्यबस्था नहि छल। लोक सभ लालटेन युगमे जी रहल छलाह। अंग्रेज सरकारक अत्याचार चरम पर छल। ग्रामीण लोकनिकेँ पढ़य लिखय सँ सरकार वंचित रखने छल। तथापि रामलषण बाबू पढ़ि-लिखि विद्वान भेल छलाह। तंत्रविद्याक सेहो पैघ जानकार छलाह। अपन तंत्र विद्यासँ माटि केँ सोना, चानी आ अन्य समान बना दैत छलाह। शुद्ध हिन्दी भाषी छलाह। गामो-घर पर हिन्दी आ अंग्रेजीक प्रयोग करैत छलाह। हिनका एक बेटा आ चारिटा बेटी छलन्हि। एकटा पोता जे शुद्ध कऽ श्याम वर्णक छलैन्ह। जेकर नाम ओ अह्लादसँ लाल बाबू रखने छलाह। ओहि पोतासँ रामलषण बाबू अत्यधिक प्रेम करैत छलाह।

साँझू पहर छल। सभ कियो दरबाजा पर अधिक उदास छलाह। हाथीक महाउथ हाथी घर साँझ देबाक हेतु गेल। दियासलाई सँ डिबिया

जलौलथि। डिबिया जरलाक बाद घरमे रोशनी पसरि गेल। ओ हाथी लग पहुँचल तँ देखैत अछि जे हाथी बैसल अछि, आ सूढ़सँ कथूकेँ झँपने अछि। सूढ़केँ लग जा कय देखलक तँ देखैए जे हेराएल बच्चीकेँ अपना जाँध तर मे लय सूढ़सँ झँपने अछि।

जाड़क समय छल। बच्ची सुतल छलीह। मन हर्षित भेलन्हि। पहिने तँ महाउथ अचंभित भेल जे हाथी असमयमे बैसल किएक अछि। ओ जोरसँ बाजय लागल जे मालीक दौगू-दौगू।

सभ कियो हथिसार दिश दौगल। रामलषण बाबू हाथीकेँ असमय मे बैसल देखलक। ओ घवरेलाह जे हाथी असमयमे कियैक बैसल अछि। बीमार तँ नहि भय गेल। हाथी बच्चीकेँ जाँघक बीच सूढ़सँ झँपने छल। ई दृश्य देखि मालिक अचंभित भय गेलाह। रामलषण बाबू हाथीसँ बच्चीकेँ देबाक लेल अनुरोध कयलन्हि। हाथी सूढ़ उठा लेलक। रामलषण बाबू बच्चीकेँ उठा लेलक। तखन हाथी उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। सभकियो अति प्रसन्न भेलाह। रामलषण बाबू हाथीक पीठ थपथपौलन्हि। मालीक हाथीकेँ नहि बेचबाक प्रण कयलन्हि। हाथी वफादार, देश भक्त आ स्वामीभक्त छल। हाथीक वफादारीक एकटा आओर उदाहरण अछि।

रामलषण बाबूक धाक एहि परोपट्टामे खूब जमल छल। दरभंगा महाराजा सल्हैता परिवारकेँ आदरपूर्वक सम्मानित करैत छलाह। तँए रामलषण बाबूकेँ विवादक निपटारा हेतु जूरीपंच मनोनित कयने छलाह। गामक नजदीक मे अंग्रेजक कचहरी छल ओतय कोनो तरहक विवादक निपटारा पंचैतीक माध्यमसँ करबाक छल। तँए ओतएसँ एकटा देवानजी रामलषण बाबूकेँ बजयबाक हेतु आयल छलाह। ओहि समय मे यातायातक लेल साइकिल, मोटर साइकिल, जीप, कार, टेम्पू उपलब्ध नहि छल। सवारीक रूपमे हाथी, घोड़ा आ बैलगाड़ी उपलब्ध छल। रामलषण बाबू पंचैतीमे जयबाक हेतु तैयार होमय लगलाह। अपना महाउथ के आदेश देलैन्ह जे हाथीकेँ तैयार कर। महाउथ हाथीक हौदा

कसय लागल। रामलषण बाबू सेहो तैयार होमय लगलाह। सल्हैता जी हाथी पर सवार भय पंचैती हेतु विदाह भेलाह। तावत् देवान जी हाथी पर चढ़ि आगा बढ़ि चुकल छल। सल्हैता जी सोचय लगलाह जे ई देवान केहेन अशिष्ट आ असभ्य अछि। ओ स्वाभिमानी लोक छलाह। हुनका आत्म सम्मानपर ठेंस पहुँचल। ओ सोचलथि जे कम सँ कम हमरा कहि दैतथि जे हम आँगा बढ़ैत छी, अहाँ पाँछा सँ आऊ। आ नहि तँ हमरा आगाँ बढ़ा ओ पाँछा सँ अवितथि।

रामलषण बाबू महाउथ कैँ ईशारा देलन्हि जे हाथीकैँ आगू बढ़ाऊ। देवानक हाथीकैँ पछुआ दीयौ। महाउथक ईशारा पर हाथी नमहर-नमहर डेग दैत देवानक हाथीकैँ पकैड़ लेलक। रामलषण बाबू महाउथकैँ ईशारा देलन्हि जे देवानक हाथीकैँ पाँछासँ चापि देअ। महाउथ हाथीकैँ ईशारा केलक जे नाला टपऽ के दरम्यान देवानक हाथीकैँ चापि दीअ। नाला टपऽ केर समय रामलषण बाबूक हाथी देवानक हाथीकैँ चापि देलक। देवानक हाथीक डाँड़ टुटि गेलैक। हाथी नेंगराय लागल।

पंचैती समाप्त भेल। सल्हैताजी घर अयलाह। देवानक हाथीक डाँड़ टुटि गेलैक। एहि बातक खबर दरभंगा महाराजा कैँ देल गेलैक। दरभंगा महाराजा सल्हैताजीकैँ दरभंगा बजौलन्हि। दरभंगा महाराजा कैँ अन्दरे-अन्दर द्वेष छलैन्ह। कियैक तँ रामलषण सल्हैताक पिता बाबू लाल सल्हैता दरभंगा महाराजाक ड्योढ़ीक निलामक बास्ते कलकत्ता उच्च न्यायालयमे केश कयने छलाह। तकर माईख छलैन्ह। रामलषण बाबू दरभंगा महाराजक ओतय पहुँचलाह। महाराजाकैँ खबर पठाओल गेल। महारजा एलाह आ कहलन्हि जे अहाँक हाथी बदमाश अछि। हमरा कचहरी परहक हाथीक डाँड़ तोड़ि देलक।

रामलषण बाबू अपन सफाई देलैन्ह जे हमर हाथी बदमाश नहि अछि। अहाँ देखू।

रामलषण बाबू हाथीकेँ कहलैन्ह जे पट हो जा। हाथी लेट गेल। हाथीक दाँत नमहर-नमहर छल। रामलषण बाबू हाथीक एकटा दाँतपर लात दय ठाढ़ भय गेलाह आ हाथ सँ दोसर दाँतकेँ पकैड़ लेलैथ आ किछु अभिनय करय लगलाह। हाथीकेँ जेना-जेना कहथिन्ह हाथी तेना-तेना करय लागल। दरभंगा महाराजा खुश भय गेलाह। ओ सल्हैताजी केँ अभय दान दय देलन्हि...।

ई दृश्य महारानी कोठाक ऊपर सँ देखि रहल छलीह। महारानीक आदेश भेलैन्ह जे ई हाथी हमरा दय दीअ आ एकरा बदला मे हमरासँ चारि टा हाथी लय लीअ। महारानीक हठ पर रामलषण बाबू किंकर्त्तव्यविमूढ़ भय गेलाह। हाथी महाराजाकेँ दय देबाक वचन देलथिन्ह।

दरभंगा महाराजा हबेलीक अन्दर रामलषण बाबूकेँ बजा कय महाराजा आ महारानी हिनका खुब स्वागत-सत्कार केलखिन आ रामलषण बाबूकेँ ससम्मान ओहि हाथीपर विदा केलैन्हि साथमे अपन अर्दली आ महावतकेँ रामलषण बाबूकेँ संग रामलषण बाबूकेँ ओतयसँ हाथी लावय लेल संग कऽ देलैन्ह। घर आबि कऽ रामलषण बाबू अपना परिवारीजनकेँ दरभंगामे बितल घटनाक्रमसँ अवगत करौलैन्ह। घरमे अजीव पशोपेशक वातावरण व्याप्त भऽ गेलैक, सभ दुखी छल। रामलषण बाबू अपन वचनकेँ पक्का छलाह। अपन 'गुजमुक्ता' हाथीकेँ खुब खुआ-पिआ कऽ महाराजाक महावतकेँ सौंइप देलखिन। आइ धरि एहि बातक चर्चा होइत अछि कि जाइबेर मे हाथी जोर-जोरसँ कानए लगलैक।

जहियासँ ई लक्ष्मिनियाँ हाथी सल्हैता जीक घर छोड़लक, तहियासँ सल्हैताजीक घरमे उड़ी-बिड़ी लागि गेलैक।

दरभंगा महाराजाक बुलाहट पर जखन रामलषण बाबू दरभंगा

जाइत छलाह तँ बाटहि मे संध्या भय गेलैन्ह। राति भय जेबाक कारणेँ ओ बाटहिमे अपन स्वजातियेक ओहिठाम रहि गेलाह। घरवारी रामलषण बाबू सन अतिथिकेँ पाबि अत्यन्त हुलसित भेलाह। सल्हैता जीकेँ के नहि जनैत छल? घरवारियोक ठाठ-बाठ जमींदारे सदृश छलन्हि। यानी ओहो एकटा जमींदारे छलाह। तम्बाकूक बड़का-बड़का ढेरी देखि रामलषण बाबू बेहद खुश भेलाह। घर वारी एहेन अतिथिक स्वागत-सत्कार विशिष्ट ढंगसँ केलन्हि। एकटा देदिप्यमान युवक जकर प्रतिभा आ सुन्दरता देखि रामलषण बाबू अपन दोसर बेटी जेकर रक्षा हाथी कयने छल। तकरा प्रति लड़काक मांग केलन्हि। ओ बच्ची आब बिबाहक योग्य भय गेल छलीह। रामलषण बाबूक ओहिठाम सम्बन्ध जोड़ब अपना केँ भाग्यशाली बुझैत छल। घरवारी लड़का देबाक लेल हामी भरलैन्ह। रामलषण बाबू ओहि स्वजातीय घरवारीसँ अने फरिया कऽ रिश्ता कायम केलन्हि। दरभंगासँ अयलाक बाद शुभ लगन मे शादीक रश्म पूरा भेल।

एमहर राम नारायण गुरुमैताक स्वर्गवासी भयलाक बाद स्वतंत्रता आन्दोलनक क्रान्तिकारी नौजवान सभ दिशाहीन आ टुगर जकाँ अपना सभकेँ महसूस करय लगलाह। रामलषण सल्हैता महान स्वतंत्रता सेनानी छलाह। एहि बातक जानकारी ओहि नौजवान सभकेँ बुझल छल। आब ओ सभ रामलषण बाबू ओतय अयलाह, आ एहि आन्दोलनक नेतृत्वक भार रामलषण बाबूक ऊपर देल गेल। रामलषण बाबू सभसँ बुजुर्ग आ नेतृत्वक योग्यता रखैत छलाह। आब ओ नौजवान सभ जाहिमे सूर्य नारायण सिंह, देव नारायण गुरुमैता, सुबोध झा, गुलावी सोनार, यमुना सिंह, उपेन्द्र मिश्र आदि छलाह।

ई सभ अंगरेज सरकारक विरोधमे अपन गति-विधि चलबैत छलाह। देश स्वतंत्र करबा मे सभ लागल रहैत छलाह। अंग्रेज सरकार ओहि क्रान्तिकारी लोकनिकेँ गिरफ्तार करबाक मुहिम चला रहल छल। नहरी गामक किछु असमाजिक तत्व जेकरा रामलषण बाबूसँ दुश्मनी

छल। ओ तत्व अंग्रेज सरकारक पिठू छल। वैह व्यक्ति आन्दोलनक गति-विधिसँ अंग्रेजी फौजकेँ अवगत करबैत छल। अंग्रेजक सिद्धान्त छल, जे 'फूट डालो और शासन करो', गामक किछु व्यक्ति केँ प्रलोभन दय अपना मे मिलौने रहैत छल आ ओकरे सँ सभ गतिविधिक जानकारी लैत रहै छल। यदि अपन देशवासी अंग्रेजक प्रलोभनमे नहि परितथि तँ देशपर अंग्रेजक शासन नहि रहैत, वा यदि रहबो करैत तँ शीघ्रहि देश आजाद भय जाइत। नहरीक आन्दोलनकारी गतिविधिक जानकारी गामक 'जयचन्द्र' अंग्रेजी फौज केँ दय देने छल।

1944 ई.क नवम्बर मास छल। दीपावलीसँ एक दिन पहिनहिक घटना छल। आठ दस स्वतंत्रता सेनानी भोजन कय रामलषण बाबूक दरबाजापर सुतल छलाह। पहरा पर बाबू देव नारायण गुरुमैता छलाह। पाँच सौ मीटर दूरहि सँ अंग्रेज सिपाही टार्च देलक आ रामलषण सल्हैताक नाम लैत दरबाजापर अयबाक कोशीश कयलक। पहरा पर मुस्तैद देबनारायण गुरुमैता सिपाहीक सामने डटल रहलाह। बजलाह-इधर आइयेगा तो गोली से उड़ा देंगे। एहमर सभ स्वतंत्रता सेनानीकेँ सचेत कय देलक जे आहाँ सभ अपन-अपन समान लय बाहर निकलि जाऊ।

जखन सभ क्रान्तिकारी घर छोड़ि भागि गेलाह तखन देबनारायण बाबू बन्दुकक संग दक्षिण तरफ भागि गेलाह। किछु क्रान्तिकारी सूर्य नारायण सिंह, सुबोध झा, गुलाबी सोनार आंगन होइत घर सँ बाहर भागि गेलाह। आंगन सँ बाहर जयबाक लेल एकहि टा रास्ता छल आ सटले बगल मे ढेकी घर छल। ढेकी घर दय बाहर जयबाक रास्ता नहि छल। ओहि ढेकी घरमे दूटा क्रान्तिकारी घूसि गेल। ढेकी घरमे यमूना सिंह आ उपेन्द्र मिश्र फँसि गेलाह। ओ दुनू क्रान्तिकारी धरैन पर चढ़ि नुका रहलाह।

घर सभक तलासी होमय लागल। कोनो घरमे कोनो क्रान्तिकारी

नहि मिलल। तलासी कयलाक बाद सभ फौज दरबाजापर जमा भय गेल। घरवारी रामलषण बाबू दरोगा सहित सभ सिपाहीकेँ ततेक ने डाँट-डपट कयलक जे सभ पानि-पानि भऽ गेल। मुदा गामक जे रामलषण बाबूक दुश्मन जे अंग्रेजी फौजकेँ सूचना दय बजौने छलाह। ओहो प्रतिद्वन्दि दरबाजापर आबि गेल छल। ओ पुलिस संग गुप्तगू कयलन्हि। दरोगा पानि पीबाक इच्छा जाहिर कयलन्हि। रामलषण बाबूक प्रतिद्वन्दिकेँ जल पियेबाक हेतु कहलन्हि। प्रतिद्वन्दि जल आनबाक हेतु आंगन प्रवेश कयलन्हि। हुनका ढेकी घरक घैलची देखल छल। ओ जल पात्र लय ढेकी घर गेलाह। घैलची पर घैला मे जल भरल छल। घैला सँ जल पात्रमे जल भरय लगलाह आ एमहर ओमहर तकबो करथि। तखनहि धरैन पर बैसल क्रान्तिकारी द्वयकेँ छुपल देखलन्हि। क्रान्तिकारी द्वय हुनकासँ पुछलैन्ह जे सिपाही सभ चलि गेल। ई सुनितहि पानि लेबाक लेल गेल प्रतिद्वन्दि आबाज दय फौजकेँ बजौलन्हि। अंग्रेजी फौज दौड़ कऽ गेल आ यमुना सिंह आओर उपेन्द्र मिश्रकेँ पकैड़ लेलक। एहि दुनू क्रान्तिकारी केँ पकड़लाक बाद पुलिस सक्रिय भय गेल। एकर बाद रामलषण सल्हैता, बिन्देश्वर सल्हैता, जिलेबी खड़गाह, जय कृष्ण सल्हैता आ टीमू मण्डलकेँ गिरफ्तार कय जहल भेज देलक। परिवारक सभ सदस्य अंग्रेजक खौप सँ भागि गेल। सभ स्त्री आ पुरुष अंग्रेजक अत्याचारसँ रातिये-राति अपन सर-कुटुम्बक ओतय चल गेल। अंग्रेजक सिपाही आ प्रतिद्वन्दिक उपद्रव बढ़य लागल। घरमे जतेक जे समान, गहना-जेबर, वर्त्तन-वासन रूपैआ-पैसा छल। सभ लुटि-पाटि कऽ लय गेल। घरक तलासीमे रामलषण बाबूक एक मात्र पुत्र विशेश्वर सल्हैताक जेबीसँ बन्दुकक गोली निकलल। जे हिनक विरोधीक षडयंत्र छल। अंग्रेजी फौज विशेश्वर सल्हैताकेँ पकड़बाक हेतु एड़ी-चोटी एक कय देलक। विशेश्वर सल्हैता घर छोड़ि अपन मामा गाम गोईत-परसाही चल गेल। विशेश्वर सल्हैताक रहबाक पता सेहो हिनक विरोधी अंग्रज

सिपाहीकेँ दय देलन्हि। सिपाही लोकनि विशेश्वर सल्हैताकेँ पकड़बाक लेल परसाही चल गेल। ओहि रातिक याद कऽ आइयो धरि रामलषण बाबूक परिवारक सदस्य सभ सिहैर उठैत छैक, सभ तरफ लूट-खसोट आ अत्याचार मचल छल। घरक कोना-कोना छानल गेल जतेक जे भऽ सकलै सभ लूटि लेल गेलैक। एहि लूट-पाटमे अंग्रेज सिपाहीक साथ गाँवक विकृत प्रवृतिक लोग सभ जिनका बाबूलाल सल्हैताक परिवारसँ मैख छलैन्ह सभ मिलल छल। एक-एक कऽ सभ किछु लूटि लेल गेलैक। बचलै तँ मात्र गोसाँइघर, एकरा साक्षात् गृह देवीक कृपा कहल जा सकैछ जे गोसाँइ घरमे मात्र छिटकीली टा लागल छलैक लेकिन ओ दरबाजा आ छिटकीली किनको सँ नहि खुजलैक। ई एकटा आओर प्रमाण थीक कि सल्हैता परिवारपर देव कृपा पुर्वहिसँ बनल रहलैक अछि।

विशेश्वर बाबूकेँ जखन पता लागल जे सिपाही हमरा पाँछा पड़ल अछि तखन ओ सीधे पूरब तरफ भागि गेलाह। विशेश्वर बाबू आँगा-आँगा भागि रहल छलाह आ सिपाही पाँछा-पाँछा खदेर रहल छलन्हि। बाधे-बाध पूरब तरफ भागि रहल छलाह। बीच बाधमे एकटा हरबाह हर जोतैत छल। अंग्रेज सिपाही हिनका पकड़बाक हेतु हरबाहाकेँ जोरसँ आबाज दय कहलक, जे विशेष्वरकेँ पकड़। संयोग एहेन छल जे हरबाहा विशेश्वर बाबूकेँ पूर्ण परिचिते छल। हरबाहाकेँ सभ बातक जानकारी छल। ओ हर जोतनाई छोड़ि सिपाहीक डरसँ विशेश्वर बाबूकेँ पकड़बाक हेतु दौड़बाक नाटक करय लागल। धीमी आबाजमे कहलनि जे भागिन अहाँ जोड़सँ भागू। हम अहाँकेँ पकड़बाक नाटक करब पकड़ब नहि। हरबाहा सिपाहीक डरे विशेश्वर बाबूकेँ खदेरय लागल। ऊँचगर मेड़ पर ओंघरा कय गिर जाथि। तावत विशेश्वर बाबू बहुत दूर भागि जाथि। सिपाही सभ थाकि गेल छल। थाकि कऽ खदेरनाई छोड़ि वापस भय गेल। हरबाहा सेहो घुमि अपन काज करय लागल। एहि तरहेँ विशेश्वर बाबू भागि कऽ

पुलिसक पछोड़सँ मुक्त भेलाह।

भागल-भागल विशेश्वर बाबू अपन जेठ बहिनक ओतय पहुँचलाह। दरबाजापर जाइत देरी एकटा तेहल्ला बाजल जे सल्हैता तँ अपने विलटबे कयल। आब लगैत अछि जे हमरो सभकेँ विलटौत। ई शब्द सुनितहि विशेश्वर बाबूकेँ आत्म सम्मानपर ठेंस पहुँचलैन्ह। ओ अपन मर्यादाक रक्षार्थ, ओतयसँ आगा बढ़ि गेलाह। हिनक बहिन जखन बुझलैन, तँ विशेश्वर बाबूकेँ रोकबाक प्रयास कयलन्हि। मुदा ओ शब्दक वाणसँ घायल छलाह विशेश्वर बाबू तँए ओतय रूकनाई मोनासिब नहि बुझलैन। भागल-भागल कोशिक ओहि पार अपन मौसी ओतय शरण लेलन्हि। ओतय रहय लगलाह। मौसा स्व. हरिबिराजी प्रतापगंजक छलाह। विराजी सेहो पैघ आन्दोलनकारी छलाह।

एमहर रामलषण बाबू सहित यमुना सिंह, उपेन्द्र मिश्र, विन्देश्वर सल्हैता, जिलेबी खड़गाह, जय कृष्ण सल्हैता आ टीमू मण्डलकेँ गिरफ्तार कय मधुबनी जेल भेज देलक। बिहार सन पिछड़ल इलाकामे स्वतंत्रता आन्दोलनक धार दिअ बाला आ स्वतंत्रता आन्दोलनमे खर्च हुअ बाला सभ खर्चकेँ निर्वहन करय बाला महान स्वतंत्रता सेनानी आ सन्त रामलषण बाबूपर अंग्रेजी हुकुमत द्वारा ओहि समयक परिपेक्षमे देशद्रोह सहित अनेको इल्जामातक झड़ी लगाएल गेल यथा ओ 1942क अंग्रेज भारत छोड़ो आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन जकाँ कतेको इल्जाम हुनकापर लगा जेलमे यातना दिअ लागलगेल। ई जानि कि रामलषण बाबू सन्त आ सात्विक प्रवृतिक छथिन, हुनका जेलक अशुद्ध आ जुठ खाना खयवा लेल देल गेलैक जेकरा ओ साफ मना कऽ देलाह। जेलमे पहिलेसँ कैद स्वतंत्रता सेनानी सभकेँ रामलषण बाबूकेँ जेलमे कैद हेबाक बात पता लगलैक तँ सभ कैदी सभ हिनकासँ मिलक लेल अयलैक आ जेलमे व्याप्त अत्यावस्था आ यातनाक बारेमे हुनका अवगत करेलकैक। तखन रामलषण बाबू जेल

अधिकारी सभसँ एहि तरहक अव्यवस्थापर बात कऽ अपन विरोध व्यक्त केलखिन। जेल अधिकारी हुनका सम्मुख तँ सुधारक आस्वासन देलकैक परञ्च यथार्थमे यातना आ अव्यवस्थाक क्रम लागले रहलैक जेकरा विरोध स्वरूप रामलषण बाबू आमरण अनसन कऽ देलखिन।

अंग्रेज रामलषण सल्हैता कैँ नाना प्रकारक यातना देबय लागल। रामलषण बाबू अनसन करय लगलाह। रामलषण बाबू पण्डित लोक छलाह। जेलक अन्न किन्नहु नहि खयलाह। सत्रह दिन धरि बिना अन्न-पानि कैँ भूखल रहलाह। अठारहम दिन रामलषण सल्हैता अपन शरीरकैँ त्यागि देलन्हि। क्रूर अंग्रेज रामलषण बाबूक लाश परिजनकैँ नहि देलैन्ह। गिरफ्तार व्यक्तिक ऊपर केश चलय लागल हिनकर माल-मवेशीकैँ पानि पियाबय बाला कोई नहि रहल। डरे कोई सर-कुटुम्ब वा पड़ोसी सभ हुनका घर पर नहि जाइत छल। एहि प्रकारे रामलषण बाबूक परिवार विलटि गेल। स्वतंत्रता आन्दोलनमे रामलषण बाबू उजैड़ गेलाह। बहुत दिन धरि परिवारक सभ सदस्य घर छोड़ि बाहरे रहल। किछु दिनक बाद विशेश्वर सल्हैता नुका कऽ घरक हाल-चाल देखैक लेल अबैत छलाह।

देश स्वतंत्र भेलाक बाद विशेश्वर सल्हैता अपन गाम वापस अयलाह। अपना घरक हालत देख दु:खी रहय लगलाह। जाबत जीबित रहलाह तावत् निर्विरोध मुखिया बनल रहलाह। किछुए दिनक बाद अपन पिताक सदृश हिनक धाक प्रशासनसँ लय समाज तकमे पसरि गेलैन्ह। धीरे-धीरे अपन कठिन परिश्रमसँ पुन: पूर्वक गौरव प्राप्त केलन्हि। हिनक मुख्य सवारी बैल गाड़ी छल। बैल गाड़ीक बनावट रथ सदृश्य होइत छल। ओहि गाड़ीमे जे बैल जोतल जाइ छल ओ घोड़ो सँ तेज धाबक छल।

एहि तरहैँ स्वतंत्रता आन्दोलनमे जे त्याग रामलषण बाबूक परिवार देखौलनहि, आ जइ तरहैँ घटना हुनका साथे घटल तइ तरहैँ घटना शायद बहुत कम परिवारकैँ घटल हेतैन्ह। जे क्षति हिनका भेलैन्ह ओ असहनीय अछि। एहेन पुरुषक कृति इतिहासक पन्नामे स्वर्णाक्षरमे लिखयबाक

चाही। एहेन देशभक्त, देशक लेल मरै-मिटै बाला महापुरुषकेँ कोटिश: अभिनन्दन, वन्दन आ नमन करैत छी। सूर्य नारायण सिंह, देवनानायण गुरुमैताजीकेँ सरकार आ समाज सम्मान देलन्हि। जे वाट्सन स्कूलक नाम सूर्य नारायण सिंह देवनारायण गुरुमैता उच्च विद्यालय मधुबनी राखल गेल। सूर्य नारायण सिंह हाल्ट भेल। मुदा जे एहेन क्रान्तिकारी जे देश आजाद करबाक लेल अपन सर्वस्व लुटा देलैन्हि हुनका सम्मानक लेल सरकार किछु नहि कय सकल। दुर्भाग्य अछि एहि देशक आ सरकारक। ❑

गुरुमैता

गुरुमैता

मिथिलाक सपूत स्व. बिहारी गुरुमैताक जन्म ग्राम- भवटियाही, जिला- सुपौल मे अठारहम शताब्दी मे भेल छलन्हि। ओ पैघ देश भक्त, क्रान्तिकारी, जुझारू, स्वतंत्रता सेनानी आ पैघ जमींदार छलाह। कतेको कामत छलैन्ह। जेना- विहारी गुरुमैता जी के निम्न मौजामे जोतसीम जमीन छलन्हि-

भवानीपुर ठरहा, महादेव पट्टी, टेंगरी, व्रह्मोतरा, लक्ष्मीनियाँ, बसन्तपुर, करजाइन, मंशापुर, गोसपुर, झमहा, चैन सिंह पट्टी, सुरती पट्टी, दिधिया, वमनी, गढ़िया, पिपड़ा, कल्याणपुर, ढौली, कटैया, मुलिया, सरायगढ़, मुरली नारायणपुर, छिटही, हनुमान नगर, महुआ, मझारी, बेला, हड़ियाही, वटिया, रहड़िया, विलन्दी, आसनपुर कुपहा, अड़राहा, बोचही, तरडीहा, महथौर, महादेमठ, फुलपरास, व्रह्मपुर, पैता, भगतपुर, सिजौलिया, खरगामा, गोढ़ियारी, अमौजा, धनौजा, सुग्गापट्टी, बलुआ, सांगी, गौर गामा, नेपालमे- दीधवा आ रामपुरा

बिहारी गुरुमैताक पिता भाईलाल गुरुमैता एकटा साधारण किसान छलाह। भाईलाल गुरुमैताकेँ तीन पुत्र छेलैन। पहिल वंशी गुरुमैता, दोसर सोनाई गुरुमैता आ तेसर बिहारी गुरुमैता। तीनू भाई मे सबसँ होशियार बुधियार आ योग्य बिहारी गुरुमैता छलाह। हिनक वंशावली निम्न अछि-

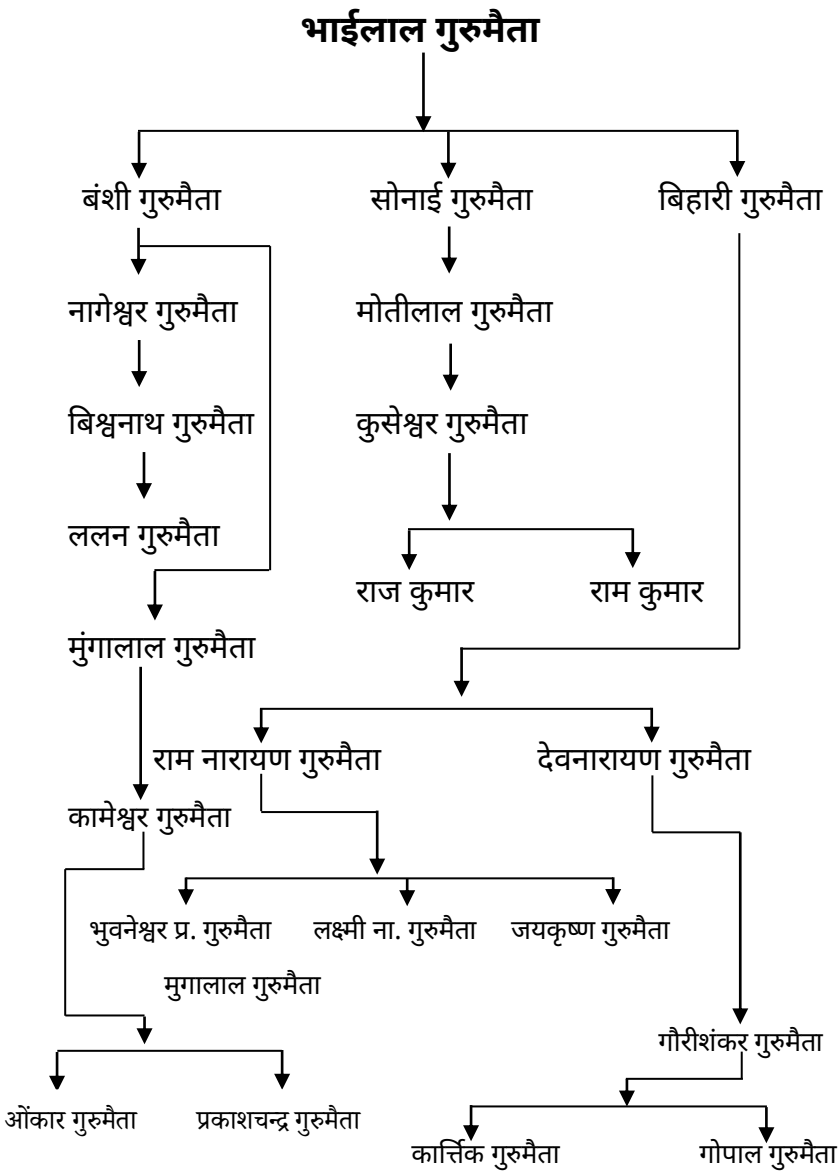
भाईलाल गुरुमैता
बंशी गुरुमैता
सोनाई गुरुमैता
बिहारी गुरुमैता
नागेश्वर गुरुमैता
मोतीलाल गुरुमैता
बिश्वनाथ गुरुमैता
कुसेश्वर गुरुमैता
ललन गुरुमैता
राज कुमार
राम कुमार
मुंगालाल गुरुमैता
राम नारायण गुरुमैता
देवनारायण गुरुमैता
कामेश्वर गुरुमैता
भुवनेश्वर प्र. गुरुमैता
लक्ष्मी ना. गुरुमैता
जयकृष्ण गुरुमैता
मुगालाल गुरुमैता
गौरीशंकर गुरुमैता
ओंकार गुरुमैता
प्रकाशचन्द्र गुरुमैता
कार्त्तिक गुरुमैता
गोपाल गुरुमैता

बिहारी गुरुमैताक सुपुत्र राम नारायण गुरुमैता आ देवनारायण गुरुमैता स्वतंत्रता आन्दोलनक दिवाना छलाह। राम नारायण गुरुमैता कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ बी.ए. पास कयने छलाह। मिथिलाक प्रथम वा द्वितीय स्नातक छलाह। राम नारायण गुरुमैताकेँ पढ़ाईक दरम्यान सुभाष चन्द्र बोस आदि स्वतंत्रता सेनानी सभसँ परिचय भेलन्हि। क्रमश: राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी, राजेन्द्र प्रसाद आदि नेताक सम्पर्क मे अयलाह। बी.ए. पास कयलाक बाद ओ बिहार अयलाह। गाँधीजीक रचनात्मक कार्यक प्रचार-प्रसारमे लागि गेलाह। ओहि अन्तरालमे (1934-1942) तक दरभंगा जिला काँग्रेस कमिटी और आर्य समाजक मंत्री पदकेँ सुशोभित कयलन्हि। अपन विद्वताक बल पर राम नारायण बाबू, राम चरित्र मानसक अंग्रेजी भाषामे पद्यानुवाद कयलन्हि। दरभंगा महाराजाक चीफ मैनेजर मिस्टर डेनवी साहेवकेँ एहि बातक जानकारी भेलैन्ह। मिस्टर डेनबी साहेव राम नारायण बाबूकेँ बजौलथि। हुनका मुँह सँ अंग्रेजी अनुवादित राम चरित्र मानसक पाठ प्रतिदिन सुनय लगलाह। मिस्टर डेनबी साहेव राम नारायण बाबूसँ अति प्रसन्न भेलाह। हिनक विद्वता, व्यवहारसँ एतेक खुश भेलाह आ हिनक विद्वताक बखान दरभंगा महाराज लग कयलन्हि। दरभंगा महाराजसँ पैरबी कय राम नारायण बाबूकेँ दरभंगा राजक फिल्ड इन्सपेक्टिंग ऑफिसरक रूपमे बहाल करौलन्हि। मुदा किछु दिन धरि ऑफिसर पदपर इमानदारी पूर्वक कार्य करय लगलाह। मुदा दरभंगा महाराजक जे अन्य मुलाजिम सभ छल ओ अति भ्रष्ट छल। अन्य कर्मचारीक चालि-चलन आ बेवहारसँ गुरुमैता जी आहत होइत रहलाह। तँए ओ ओहि पद सँ त्याग-पत्र दय देलन्हि। हिनका सभक संग काम केनाई राम नारायण बाबूकेँ पसिन नहि भय रहल छलैन्ह। इस्तिफा दय काँग्रेसक पूर्णकालिक कार्यकर्त्ताक रूपमे समाजक सेवा मे लागि

गेलाह। एहि दौरान ओ शिक्षाक प्रचार-प्रसारमे लागल रहलाह। आम जनता तक शिक्षाक प्रसारक लेल ओ पुस्तकालय, विद्यालय खोलौलन्हि। ओहि क्रममे ललित नारायण मिश्र आ हिनक भाई लोकनि गुरुमैताजीक शिष्य बनलाह। स्वतंत्रता आन्दोलनमे ललित बाबूक परिवारक योगदान अभूतपूर्व रहल। भारत छोड़ो आन्दोलनमे सक्रियतापूर्वक भागीदारी रहलन्हि।

सन् 1939 ई. मे गाँधी जीक भवटियाही मे विशाल सभाक आयोजन करौलन्हि। एहि सभामे हजारो-हजार लोग भाग लेलन्हि। राम नारायण बाबू पैघ जमींदार छलाह। कोनो चीजक कमी नहि छलैन्ह। सभामे आयल दर्शनार्थीक भोजनोक व्यवस्था कयने छलाह।

राम नारायण बाबूक माता श्री अपना हाथसँ चरखा द्वारा सूत तैयार कय गाँधी जीकेँ भेँट कयने छलीह। राम नारायण बाबू गाँधी जीकेँ आस्वस्त कयलन्हि जे कपड़ा मामला मे हम स्वाबलम्वी भय रहल छी। चरखा द्वारा घर-घर मे सूत कटा रहल छल। गाँधी जीक विशाल सभा मे डा. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता गाँधी जी केँ स्वागत मे 'विजय विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा उच्चा रहे हमारा' गीत गावि माला पहिराबय गाँधी जीक समीप पहुँचलाह। कद-काठीमे छोट रहबाक कारणेँ हाथ गाँधी जीक गर्दनि धरि नहि पहुँचलन्हि। गाँधी जी गुरुमैता जी केँ गोदीमे उठा लेलन्हि आ भुवनेश्वर बाबू गाँधी जी के गर्दनि मे माला पहिरा देलैन्ह। करतल ध्वनि सँ उत्साहित जनता गाँधी जीक स्वागत केलैन्ह।

सन् 1940 ई. मे रामगढ़ मे काँग्रेसक बैसार छल। दरभंगा जिलाक काँग्रेस कमिटी मे निर्णय भेल जे एहि बैसार मे भाग लेबाक हेतु राम नारायण बाबू केँ भेजल जाय। राम नारायण बाबू रामगढ़क काँग्रेस कमिटीक बैसार मे भाग लेबाक हेतु पहुँचलाह। ससमय गाँधी

जीक अध्यक्षता मे बैसार प्रारम्भ भेल। रामगढ़क बैसार मे निर्णय भेल जे सुभाष चन्द्र बोसक जगह पट्टाभि सीता रमैया कैँ अध्यक्ष बनाओल जाय। राम नारायण गुरुमैता एहि प्रस्तावक विरोध कयलन्हि आ ओ गाँधी जीक खेमा सँ बाहर भय नेताजीक खेमा मे आबि गेलाह। राम नारायण बाबू स्वाबलम्वी, न्यायवादी, स्पष्टवादी, सत्यवादी एवम् जुझारू विद्वान नेता छलाह। भीषण बाढ़िक प्रकोप हिनक भवटियाही कामत कैँ तहस-नहस कय देलक। निर्मली सँ फारविस गंज तक रेल गाड़ीक परिचालन छलैक। ओहि बाढ़ि मे जे ई रेल लाइन टुटल से आई धरि नहि बनि सकल। राम नारायण बाबू गोढ़ियारी (फुलपरास) कामत पर आबि रहय लगलाह। भुवनेश्वर प्रसादक उम्र तकरीवन 11-12 वर्ष भेल छल। अपन पुत्र कैँ पढ़यबाक लेल राम नारायण बाबू हुलासपट्टी मध्य विद्यालय मे नाम लिखौलन्हि। ओहि समय मे विद्यालयक कमी छल। शिक्षा पर लोकक आ सरकारक ध्यान कमे छल। सरकारक इच्छा छल जे जनता मूर्ख बनल रहय आ हम राज करैत रही।

1942 ई.क आन्दोलन मे जखन भुवनेश्वर प्रसाद जी 12 वर्षक छलाह आ हुलासपट्टी मध्य विद्यालयमे पढ़ैत छलाह। तखन हिनक पिता हुलासपट्टी मध्य विद्यालय पर पहुँचलाह आ भुवनेश्वर प्रसाद जी सँ कहलैन- बौआ, एहि आन्दोलनमे पटना मे राष्ट्रीय झंडा फहिराबय मे सात गोट जबान शहीद भय गेल। आब आठम मे तोहर बारी छह।'

एक बापक देशक प्रति एहेन देश भक्तिक भावना कोनो दोसर ठाम नहि भेटत। देश आजाद करबाक लेल अपन सन्तान तक के बलिदान देबाक लेल तैयार छलाह। राम नारायण बाबू अपन पुत्र भुवनेश्वर प्रसाद कैँ कहलन्हि- तों अपन विद्यालयक छात्र लोकनि कैँ नेतृत्व करैत फुलपरास थाना पर राष्ट्रीय झंडा फहराबियह। हम

अपन एकटा बेटा कैँ भारत माताक लालक रूपमे बलिदानक लेल सूपूर्द कय रहल छी। गोली चलत तकर डर नहि करियहह।’

ई बात 11 अगस्त 1942 ई.क छल। 12 अगस्त 1942 ई. कैँ अपना विद्यालयक छात्रक नेतृत्व करैत हाथ मे झंडा लय भारत माताक जय जयकार करैत भीड़क संग फुलपरास थाना पहुँचलाह। हजारक-हजार संख्या मे छात्र, नौजवान, किसान आ इलाकाक ग्रामीण जनता सभ थाना कैँ चारू कात सँ घेरने छल। भुवनेश्वर प्रसाद हाथ मे झण्डा लय भारत माताक जय जय कार करैत थानापर झंडा फहरौलैथ। गोली चलि रहल छल। गोली भुवनेश्वर प्रसाद जीक अगल-बगल सँ गुजरैत छल। जानक बिनु परवाह कयने ओ अपन काम करैत रहलाह। तत्कालीन दरोगा भुवनेश्वर प्रसाद पर बन्दुकक निशाना लगौलन्हि। आब गोली चलत कि दरोगाक पत्नी सहृदय आ नि:सन्तान छलीह। ओ अपन पति दारोगाक पैर छानि लेलन्हि, जाहिसँ दरोगाक निशाना चुकि गेल आ भुवनेश्वर बाबू शहीद होमय सँ बाँचि गेलाह, ‘जाके राखे सांईयाँ मारि सके ने कोय’ चरितार्थ भेल। उग्र भीड़ दरोगा पर टुटि पड़ल।

ओ सभ दरोगाकैँ धमकी देबय लागल। जँ ई बच्चा अहाँक गोली सँ मरत तँ अहूँ कैँ निर्वंश कय देब।

भुवनेश्वर बाबूक नेतृत्व मे 12 अगस्त के झंडा फहराओल गेल। आ 13 अगस्त कैँ थाना मे आगि लगा कैँ राख कय देलन्हि। चारू कात हाहाकार मचय लागल। 12 अगस्त 1942 ई. कैँ भारत भरि मे सभ सरकारी संस्था पर खास कय थाना पर क्रान्तिकारी लोकनि राष्ट्रीय झंडा फहरौलन्हि। जयनगर थाना पर सेहो गोली चलल ओहि मे नथुनी साहु जे एकटा व्यापारी छल, जे गुड़ बेचबाक लेल जाइत छल। ओकरा गोली लागि गेल आ ओ शहीद भय गेलाह। अखनो ओहि शहीद स्थलकैँ शहीद चौक कहल जाइत अछि। थाना

पर झंडा फहरेनाई, आ थाना मे आगि लगबाक अभियोग मे भुवनेश्वर बाबू पर मुकदमा चलय लागल। म. वि. हुलास पट्टी सँ भुवनेश्वर बाबूक नाम कटा देल गेल।

देश पर होने को बलिदान,

जहाँ बच्चे जन्म लिया करते हैं।

मांग तो पसीने की होती है,

ये तो खून दिया करते हैं।

राम नारायण गुरुमैताहुँ पर मुकदमा चलय लागल। राम नारायण बाबू भूमिगत रहय लगलाह। भूमिगत रहैत आन्दोलन कैँ सक्रिय रखलन्हि। राम नारायण बाबूकैँ समस्तीपुर रेलबे स्टेशन पर एकटा दिव्य साधुसँ भैँट भेलैन्ह। ओ दिव्य साधु कहलन्हि- 'गुरुमैता जी आप कुछ ही दिनों के मेहमान हैं। आपके कामत गोढ़ियारी को जला दिया गया है। सैंकड़ो मन अनाज जलकर राख हो गया। आप अपने पैत्रिक गाँव बाइसी चले जाइये।'

बिहारी गुरुमैता, रामनायण बाबूकैँ घर भेज देलकैन्ह। राम नारायण बाबूक मित्र जे झंझारपुर मे डॉक्टर छलाह। हुनक नाम प्रभाष बाबू छल। डॉक्टर साहव बहुत प्रयास केलन्हि जे अहाँ हमर दवाई खाऊ। मुदा राम नारायण बाबू अंग्रेजी दबाई नहि खयबाक शपथ लयने छलाह। बाइसी गढ़ी काश-पटेरक जंगलसँ भरल छल। एहि गाममे रामायणक पाठ करैत, तुलसी पातक काढ़ा पिबैत अपन प्राण त्यागलैन्ह।

राम नारायण गुरुमैता 20 अक्टुबर 1942 ई मे 35 वर्षक अवस्थामे स्वर्गवासी भय गेलाह। स्वर्गवासी होमय सँ पहिनहि अपन सुपुत्र भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता कैँ तीन बचनक पालन करबा हेतु कहलन्हि।

1. बेटा- मदन मोहन मालबीयजीक हिन्दू विश्वविद्यालय सँ एम.ए. करियहह।

2. माँ कैँ देशाटन, तीर्थाटन करा देवनि।

3. पढ़ाई सम्पन्न भेलाक बाद देश सेवा मे लागि जाएब।

एहन परिस्थिति मे भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता (छोटे गुरुमैता) विचलित नहि भेलाह। दाह संस्कार सम्पन्न भेल, तेसर दिन अस्थि कलश चुनबाक हेतु अपन चचेरा भाई कामेश्वर गुरुमैता आ कुशेश्वर गुरुमैताक संग दाह-संस्कारबला जगह पर गेल छलाह। छोटे गुरुमैताक गिरफ्तारी हेतु वारण्ट लय अग्रेज फौज दरबाजापर पहुँच गेल। एहि बातक सूचना भुवनेश्वर बाबू कैँ देल गेल जे अग्रेज सिपाही अहाँ के गिरफ्तार करबा लेल दरबाजा पर आबि गेल। अहाँ घर पर नहि आऊ। ओम्हरे सँ नेपाल चलि जाऊ। ओ अपन चचेरा भाई कामेश्वर बाबू आ कुशेश्वर बाबूक संग नेपालक तरफ समतागढ़ी दिस भागि गेलाह। ओतय सँ रामेश्वर मरिता अस्थि कलश लय गंगा मे प्रवाहित कयलन्हि। गुरुमैता जीक तकरीवन दू हजार (2000) गाय समता गढ़ी मे चरैत छल। जकर देखभाल वा निगरानी मालकियतक रूपमे स्व. गुभन गुरुमैता जी करैत छलाह। गुरुमैताजीक सभसँ पैघ आमदनीक स्रोत गायक दूध, दही, घी आ बाछा-बाछीक बिक्रीसँ होइत छल। सम्पतिक अर्जन करय बाला सभसँ पैघ स्रोत गाये छल। सरकारक मंत्रीमण्डल जकाँ सभ समांगकैँ अलग-अलग प्रभार भेटल छलन्हि। खेतीक प्रभार स्व. रामजी गुरुमैता एवं स्व. जगदेव गुरुमैताकैँ भेटल छलन्हि। ओ दुनू भाँइ जुझारू खेतीहर किसान छलाह। छोट भाई भातिज सभ हिनका किसानी कार्यमे सहयोग करैत छलाह। हिनका सभक कठिन मेहनतक फलस्वरूप गुरुमैता परिवारक उन्नति दिन दुना राति चौगुना होमय लागल। एहि खेतीबारीसँ कतेको एकड़ जमीन खरीद लेलैन्ह। कतेको कामत बना

लेलन्हि। सम्पतिक अर्जन करय मे स्व. फेकू गुरुमैताक योगदान स्मरणीय अछि। एहि परिवारक विशेषता ई छल जे प्रत्येक साल, सालभरिक लेखा-जोखाक अंकेक्षण (औडिट) हरेक विभागक होइत छल। ई कार्य स्व. बिहारी गुरुमैताक नेतृत्वमे होइत छल। स्वतंत्रता आन्दोलनमे गुरुमैता परिवारक पुरुषक जे योगदान रहल से रहबे कएल एकर अतिरिक्त बेटियोक योगदान अभूतपूर्व रहल। एहि परिवारक एक बेटी जकर नाम श्रीमती शृंगार देवी छल। जे स्वतंत्रता आन्दोलनकारीकेँ भोजन बना कऽ खुअबथिन्ह। ओ देवनारायण बाबूक बहिन छलथिन्ह। ओहि शृंगार देवीक विवाह सुग्गापट्टी फुलपरासमे भेल छल। जकर बेटा श्री जयप्रकाश भिण्डवार पैघ डॉक्टर छथि। नारायणपुरमे बिहारी गुरुमैता हाइ सकूल खोलि शिक्षाक प्रसार केलथि। समता गढ़ी मे गुरुमैता, बिराजी, मुसकुलिया, सल्हैता आ भिण्डवारजी सभ गायक देख-रेख करैत छल। सिपाही छोटे गुरुमैताक तलाशी कय वापस होमय सँ पहिनहि हिनका घर मे आगि लगा देलक। ई कारूणिक दृश्य देखि इन्द्र भगवानक हृदय द्रवित भय गेलन्हि आ झमाझम वारिश होमय लागल। भगवानक महिमा अपार अछि। घर जरऽ सँ बाँचि गेल। ग्रामीण मे सँ एकटा रिटायर्ड मलेट्री छल। जिनक पिता टुनटुन जी छलथिन्ह। ओ सिपाही लोकनि के बड़ फटकारलैन्ह। सिपाही लोकनि वापस चलि गेला।

राम नारायण गुरुमैताक निधनक पश्चात् भुवनेश्वर गुरुमैताक अपन चाचा देवनारायण गुरुमैता स्वतंत्रता आन्दोलनक भार अपना ऊपर लेलन्हि। आव एहि स्वतंत्रता आन्दोलन नेतृत्व कर्त्ता खुटौना थानाक नहरी निवासी रामलषण सल्हैता भेलाह। भुवनेश्वर बाबू अपन पिताक श्राद्ध कर्म सम्पन्न कय, आगाँक पढ़ाईक हेतु वेगूसराय चलि गेलाह।

ओहि समय मे भुवनेश्वर बाबूक चाचा नागेश्वर गुरुमैता जतय एकटा बैंकक मैनेजरक पद पर पदस्थापित छलाह। बेगूसराय मे दू टा उच्च विद्यालय छल। जतय वर्ग छ: सँ ग्यारह तकक पढ़ाई छल। एकटा बी.पी. उच्च विद्यालय आ दोसर जे.के. उच्च विद्यालय। बी.पी. उच्च विद्यालयक प्राचार्य नामांकन नहि लेलन्हि। तखन नामांकन हेतु जे.के. उच्च विद्यालय गेलाह। तत्कालीन प्राचार्य रामेश्वर सिंह छलाह। जे एम.ए. पास छलाह। ओहि समय मे बहुत कम एम.ए. पास होइत छलाह। प्राचार्य भुवनेश्वर बाबूक जाँच परीक्षा लेलन्हि। एक सौ (100) अंकक प्रश्न देल गेल। 100 अंक मे 100 अंक गुरुमैताजी अनलैन्ह। प्राचार्य रामेश्वर सिंह वालकक प्रतिभा देखि गदगद भय गेलाह। नामांकन भय गेलन्हि। गुरुमैता जी मन लगा कय पढ़य लगलाह। गुरुमैता जी बेगूसराय मे पढ़बो करथि आ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघक शिविर मे सेहो भाग लेबय लगलाह। हिनक चाचा देवनारायण गुरुमैता जे जेलक दिवार फानि कय भागि बेगूसराय चल गेल रहैथ, ओ भुवनेश्वर बाबू पर तमसैल रहैत छलाह। देव नारायण बाबू अपन भातिज भुवनेश्वर प्रसाद कैँ डटैत रहैत छलाह जे तों आर.एस.एस.क शिविर मे कियैक जाइत छेँ। धीरे-धीरे भुवनेश्वर बाबू राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघक प्रचारक बनि गेलाह। किछु दिन बेगूसराय मे पढ़ि तत्पश्चात् लहेरियासराय दरभंगा मे नामांकन करौलन्हि। लहेरियासराय क जिला स्कूल दरभंगा (नौर्थ ग्रुप) मे 9 म् वर्ग मे पढ़य लगलाह। ओहि समय मे आजाद हिन्द फौजक ट्रायल शुरू भेल छल। दरभंगा मे स्वतंत्रता सेनानी सभकेँ फाँसी सँ बचयबाक हेतु आन्दोलन शुरू भय गेल। जकर दरभंगा मे भुवनेश्वर प्रसाद नेतृत्व करय लगलाह। स्व. धनिक लाल मण्डल आ अन्य साथी लोकनि मिलि रैली निकाललैथ जकर नारा निम्न छल-

ढीलन, सहगल, शहनबाज- इनकलाव-जिन्दावाद।

जय हिन्द- जय भारत

दिल्ली चलो- दिल्ली चलो

अंग्रेजों- भारत छोड़ो

लाल किलासँ क्रान्तिकारी सभकेँ छोड़यबाक लेल दिल्ली चलोक नारा दैत, दिल्ली जयबाक तैयारी करय लगलाह। जिला स्कूल सँ भुवनेश्वर प्रसाद उच्च अंक सँ मैट्रीक पास कयलन्हि।

स्वतंत्रता आन्दोलन मे स्वतंत्रता सेनानी केँ विशेष कय क्रान्तिकारी केँ घर पर अनावश्यक छापा मारी कय सम्पतिक कुर्की जप्ती कय सरकारी कर्मचारी बड़ परेशान करैत छल। एहि सिलसिलामे क्रान्तिकारी लोकनिक परिवार केँ बहुत यातना देल जाइत छल। ओहि परिवार सभकेँ बड़ कष्ट झेलय पड़ैत छल। ओहि दरम्यान क्रान्तिकारी लोकनि ओकर जी तोर जबाव सेहो दैत छल। दरभंगा सँ पूरब आन्दौली नामक गाम मे दरोगाक संग किछु सैनिक, क्रान्तिकारी पर हमला कयने छल तखन क्रान्तिकारी लोकनि गुरिल्ला युद्ध ठानि देलन्हि। सुवोध झा, यमुना सिंह आ देव नारायण गुरुमैता गाछ पर नुकायल छलाह। पुलिस जखन गश्ती सँ वापस अबैत छल। तखन नुकायल क्रान्तिकारी लोकनि गाछ पर सँ कुदि दरोगा आ पुलिस सभ पर आक्रमण कय देलक।

एहि क्रान्तिकारीक नेता देवनारायण गुरुमैता साइकिल सँ चलैत दरोगा पर एकटा पेड़ सँ कुदि कय वन्दुक छीन ओहि दरोगा केँ आ अन्य पुलिसहुँ केँ मारि देलक। दरोगा, पुलिस केँ मारि ओतय सँ सभ क्रान्तिकारी भागि गेलाह। देव नारायण बाबू पर भा.द.वि. 302 क मुकदमा चलय लागल। आ ओ पकड़ा गेलाह। परिणाम स्वरूप देव नारायण बाबू केँ फाँसीक सजा भय गेल। एहि कारण परिवारक सभ सदस्य लहेरियासराय जेलक सामने अति दु:खी भाव सँ धरना

दय पड़ल रहल। ओहि दिनक प्रात:काल मे देवनारायण बाबूकेँ फाँसी देबाक फैसला भेल छल। ओहि दिनक भयावह सांझु पहर देव नारायण बाबूक भातीज भुवनेश्वर गुरुमैता जेलमे भेँट करबाक हेतु गेलथिन्ह। ओ देखलन्हि जे चाचाजीक शरीर जंजीर सँ बान्हल छल, आ ओ सेल मे पड़ल मौतक इन्तजार कय रहल छथि। चाचा केँ कष्टक स्थिति मे देखि बड़ दु:खी भेलाह। आँखि सँ दहो-बहो नोर जाय लगलैन्ह। तखनहि देव नारायण बाबू केँ एक उपाय (युक्ति) सुझलैन्ह। ओ भुवनेश्वर जी केँ बाजार सँ जमाल-गोटा आनबाक हेतु कहलन्हि। भुवनेश्वर जी बाजार सँ जमाल-गोटा आनि कऽ देव नारायण बाबूकेँ दय देलनि। जमाल गोटा प्राप्त कय देव नारायण बाबू खा लेलाह। एहि सँ राति भरि पेट सँ पानि गिरय लगलैन्ह। मरणासन्न अवस्था मे भय गेलाह। जेलर जेलक डॉक्टर केँ बजा इलाज करौलन्हि। एक तरफ पानि चढ़ि रहल छल आ दोसर तरफ पेट सँ पानि सदृश्य पैखाना निकलि रहल छल। भोरे फाँसी पड़बाक छल। डॉक्टर जाँच कयलन्हि आ फाँसीक लेल अयोग्य घोषित कय देलक। जकर फलस्वरूप देवनारायण बाबूक फाँसी रूकि गेल। डॉक्टर नीक जकाँ इलाज करय लगलाह। जज साहेव पूर्ण रूपेण स्वस्थ्य होमय तक फाँसी रोकि देलन्हि। फाँसी देबाक लेल अगिला तारीख रखबाक जरूरत पड़ि गेल। बादमे फाँसीक सजा आजन्म कारावास मे बदलि गेल। तावत देश केँ आजाद करबाक लेल मांउट बेटन गाँधी जी सँ वार्ता करय लगलाह। ओमहर जय प्रकाश नारायण आओर राम मनोहर लोहिया जी लाहौर मे बहुत प्रकारक यातना झेल रहल छलाह। यातना झेललाक बाद आगरा जेल मे आबि गेल छलाह। वार्ता मे हमर क्रान्तिकारी नेता सभक मांग छल जे जावत हमर स्वतंत्रता सेनानी जेल सँ मुक्त नहि होयताह तावत् समझौता पर बात नहि होयत। एहि बातक जनतब अंग्रेज अफसर केँ देल

गेल। बड़ कसम-कसक बात चलैत रहल। लहेरियासरायक किंग्स पार्क मे पैघ जन सभाक आयोजन क्रान्तिकारी लोकनि कैँ छोड़ेबाक बास्ते कयल गेल। अन्तमे अंग्रेज सरकार मजबूर भय क्रान्तिकारी लोकनि कैँ छोड़बाक बास्ते शर्त मानि लेलक। एहि विशाल सभा मे लोक नायक जय प्रकाश नारायण जी शुरू मे कहने छलाह जे आई हम सभ गुलामीक जंजीर कैँ तोड़बाक वास्ते बड़ आनन्द सँ एक दोसर सँ मिल-जुइल रहल छी आ खुशी मना रहल छी। हमर अभिलाषा अछि कि एहि सभाक प्रारम्भ मे महान विद्वान जिनका जिह्वा पर सरस्वती विराजमान छथि, श्री राम बृक्ष बेनीपुरी अपन उद्गार व्यक्त करताह। यद्यपि हमरा लोकनि कैँ ई आजादी अंग्रेज सरकारक यातना सँ त्रसित भय भेटल अछि। जय प्रकाश नारायण भागि कऽ नेपाल गेल रहैथ तखन ओतहु नेपाल सरकार अंग्रेजक दवाब पर जय प्रकाश नारायण कैँ पकड़ि हनुमान नगर जेल मे डालि देने छल। देव नारायण बाबू सेहो ओहि जेल मे बन्द रहैथ। देव नारायण बाबू हनुमान नगर जेलक चाहरदिवारी तोड़ि जेलसँ राम मनोहर लोहिया जय प्रकाश बाबूक संग भागि चुकल छलाह। जेलसँ लगधक तीन-चारि किलोमीटर दूरीपर जखन ओ सभ जंगलमे पहुँचलाह तखन लोहियाजी देव नारायण बाबूकैँ कहलथिन्ह- 'अरे देवनारायण, मेरा चश्मा तो जेलेमे छूट गया। अब क्या होगा।'

देव नारायण बाबू वापस जेल जा कऽ चश्मा आनलखिन आ लोहियाजी कैँ देलखिन। हनुमान नगर सँ जंगले-जंगल भागि वाइसी गढ़ी आबि गेलाह। जय प्रकाश बाबू सुकुमार लोक छलाह। बाट मे चलनाई दुष्कर भय जाइत छल। कास-पटेर सँ आक्षादित जंगल होइत अबैत छलाह। जखन जय प्रकाश बाबू चलऽ सँ असमर्थ भय जाइत छलाह तखन देव नारायण बाबू जय प्रकाश बाबू कैँ अपना कंधा पर कन्हेठ कय चलैत छलाह। नेपाल सरकार देव नारायण बाबू

पर शूट वारण्ट जारी कयने छल। तँए नेपाल जयवा सँ देव नारायण बाबू परहेज करैत छलाह।

देवनारायण गुरुमैता शोसलीस्ट पार्टीक मुखर नेता छलाह। नेताक साथ-साथ ओ सफल समाज सेवा आ गाम-घरक आपसी झंझट-फसादक फैसला सेहो करैत छलाह। ओहि दरम्यान मधुनबी जिलान्तर्गत खुटौना प्रखण्डसँ पश्चिम उत्तरमे मालीन बेलहामे सरकारी जमीन तकरीवन 60 वीघा छल। जाहि जमीनपर ओही ग्रामवासी सभक कब्जा छलैक। गरीव गुरबा ग्रामीण सभ मिलि कय जमीन बाँटि नेने छल। ग्रामीण लोकनिकेँ देवनारायण बाबू एहि जमीन बँटबारामे सहयोग कयने छलन्हि। कियैक तँ देवनारायण बाबू गरीव-गुरबाक नेता छलाह। संगहि लौकही-लौकहा विधान सभासँ एम.एल.ए.केर उम्मीदवार सेहो छलाह। मालीन बेलहाक जमीनकेँ फुलपरास निवासी स्व. नसीव लाल यादव अप्पन जमीन बताबैत छलाह। एहि विवादक निपटारा हेतु बड़ पैघ पंचैती भेल छल। पंचक रूपमे देव नारायण गुरुमैता, रसिकलाल यादव (इनरबा) अनन्त लाल कामत (गड़वा) मालीन बेलहा पंचैती करबाक हेतु गेल छलाह। पंचैतीमे जमीनक कागज-पतर देखलाक बाद शायद फैसला ग्रामीणक पक्षमे भेल छल। शायद एहि लेल जे जखन पंचैती समाप्त भेल तखन पंच सभ अपन –अपन घर आवय लगलाह। देव नारायण बाबू रसिक लाल बाबू आ अनन्त लाल बाबूजी संगहि फुलपरास तरफ मुखातिव भेलाह। बाटमे नसीव लाल आ नवीब लालक लठैत लोकनि एहि तीनू आदमीकेँ घेरि मार-पीट करय लगलाह। रसिक लाल बाबू दुवर-पातर लोक छलाह। अनन्त बाबू विमरियाह छलाह। तेँ देव नारायण बाबू दुनूकेँ बचेबाक खातीर अपने बेशी मारि खेलाह। देव नारायण बाबूकेँ ततेक ने मारि लगलन्हि जे धोतीयेमे पैखाना-पैसाव भय गेलैन्ह आ ओ बेहोशो होइतहु फुलपरासमे प्रमुख

व्यक्ति सभकेँ कहथिन्ह जे हमरा नसीव लाल मारलैथ अछि। एकर बाद ओ फुलपरास थाना पर जा दरोगाकेँ सहो पूरा शरीर जाहि-जाहिठाम मारि लागल छल देखेलाह आ कहलैन्ह जे हमरा नसीव लाल आ ओकर लठैत सभ मारलक अछि। दरोगा बजलाह- नेताजी केश कर दीजिए। देव नारायण बाबू कहलैन हम केश नहि करब सिर्फ अहाँ देख लीअ जे हमरा मारि लागल अछि की नहि। ई कहैत ओ अपन गोढ़ियारी कामत पर चलि गेलाह। एहि बातक सूचना हिनका घरपर आयल आ हिनक शुभचिन्तक सभ सेहो बुझलनि। सभ कियो गोढ़ियारीमे जमा भेल। रसिक लाल यादव इनरबा आ अनन्त लाल कामत (गरबा) सेहो पहुँचलाह। मालीन बेलहा वाला सेहो अधिक संख्या वलमे पहुँचैत गेलाह। सभक निर्णय भेल जे फुलपरास के लुटि लेल जाय। मुदा देवनारायण बाबू बजलाह नाहकमे एक आदमीक गलतीक चलते समुच्चा ग्रामीणकेँ कष्ट देब। मारि-पीट नहि करू। देवनारायण बाबूक थोम्ह-थाम्ह पर फुलपरासकेँ लुटनाई वाला प्रस्ताव खारीज भय गेल। मुदा मालीन बेलहा बाला रूकल नहि किछु दिन शान्तिसँ रहल। देव नारायण बाबू स्वस्थ्य होमय तक अपन गाम मटियारी चल गेलाह। एमहर देव नारायण बाबूक पक्षधर सभ मिलि नसीव लाल यादव के जानसँ मारि देलक। जकर कोनो केशो मुकदमा नहि भय सकल। देव नारायण बाबू केँ राम मनोहर लोहिया जय प्रकाश बाबू, रामफल मण्डल, अनन्त लाल कामत जन नायक कर्पूरी ठाकुर जीसँ सम्बन्ध छलैन्ह। कर्पूरी ठाकुर जी देवनारायण बाबूक सहकर्मी छलथिन्ह।

देवनारायण बाबूक चचेरा भाई वंशी गुरुमैताक सुपुत्र स्व. नागेश्वर गुरुमैता जे वेगुसराय बैंकमे पदाधिकारी छलाह। जिनका डेरापर देवनारायण बाबू आन्दोलनक दरम्यान छुपिकय रहैत छलाह। ताहि नागेश्वर गुरुमैताक सुपुत्र विश्वनाथ गुरुमैता जे स्वतंत्रता

आन्दोलनक समय आन्दोलनमे कमो-बेशी भाग लैत रहलाह। देश आजाद भेलाक बाद ओ किसनपुर विधान सभासँ विधायक भेलाह। हुनके नामपर विश्वनाथ गुरुमैता इन्टर महाविद्यालय खुलल अछि। ओहि कॉलेजपर 16 अप्रील 2023 कैँ घोषीन यादवक महासभाक आयोजन भेल छल। बी.एन. कॉलेज, पटनामे पुस्तकालय छैक जे देवनारायण गुरुमैता लाइब्रेरीक नामसँ बनल अछि। देव नारायण बाबूक नेतृत्वमे जननायक कर्पूरी ठाकुर सूरज नारायण सिंह आन्दोलन करैत रहलाह। श्री कृष्ण यादव उ. विद्यालय फुलपरासक ओ किछु दिन धरि सचिव सेहो रहलाह। हाँजीपुरक स्व. वसावन सिंह हिनक क्रान्तिकारी मित्र रहथिन्ह। हर हमेशा आन्दोलनकैँ द्रुत गति प्रदान करयमे सहायक रहथिन्ह। देश स्वतंत्र भेलाक बाद सिंह साहव कोनो विधान सभा क्षेत्रसँ विधयक निर्वाचित भेलाह। देवनारायण बाबू आन्दोलनक दरम्यान हजारीवाग जेल यात्रा सेहो कयने छलाह। एक समयक बात छल देवनारायण बाबूकैँ गिरफ्तार करबाक हेतु अंग्रेज फौज हुनका घरपर गेल छल। देव नारायण बाबू तँ नहि पकडेलाह। हिनक एक मात्र पुत्र गौड़ी शंकर गुरुमैता जे अंगनामे खेलाइत छल। बड़ छोट छल। गौड़ी शंकर जी कैँ अंग्रेजी फौज क्रोधित भय वूटसँ कुचैल मारि देबाक प्रयास कयने छल। मुदा भगवानक कृपासँ गौड़ी शंकर जी बाँचि गेलाह। मारैवाला सँ बचाबै वाला महान होइत अछि। उर्दू मे एकटा शैर छैक जे नूरे हक शमा इलाही को बुझा सकता है कौन जिसका हामी है खुदा उसको मिटा सकता है कौन। देवनारायण बाबू अप्पन हिस्साक 60 एकड़ जमीन बेचि आन्दोलनमे लगौने छलाह। देव नारायण बाबू 1952 में फुलपरास विधान सभासँ आ दोसर बेर 1962 मे लौकहा लौकही विधान सभासँ विधायक भेल छलाह। एहि महामानवक महाप्रयाण 25.9.1970 ई.कैँ भय गेल। हिनका निधनसँ मधुबनी आ सुपौल

जिलाक लोक मर्माहत भेल छल।

हुनका सभकेँ हम सभ एहि प्रकारक कष्ट झेलबाक लेल नमन, बन्दन आ अभिनन्दन करैत छियैन्ह।

एहि प्रकारक यातना सँ देव नारायण बाबू मुक्त भेलाह। देश आजाद भय गेल। 1952 मे बिहार विधान सभाक चुनाव भेल। अधिकांश जगह सँ काँग्रेसक उम्मीदवार विजय भेलाह। लौकहा विधान सभा सँ देवनारायण बाबू सोसलिस्ट पार्टीक उम्मीदवारक रूपमे विजय घोषित भेलाह। खुटौना सँ पूरब कोशी नहरक बगल मे छाड़ापट्टीक नजदीक देव नारायण बाबूक स्टेच्यू लागल। वाट्सन उच्च विद्यालय मधुबनीक नाम बदलि केँ सूर्य नारायण सिंह, देवनारायण गुरुमैता +2 उ. वि. मधुबनी राखल गेल। महान स्वतंत्रता सेनानीक मान, सम्मान देबाक लेल स्थानीय राजनेता श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव जीक प्रयास सफल रहल। जाहि सँ (पूर्व केन्द्रीय मंत्री) देवेन्द्र प्रसाद यादव जी मधुबनीये नहि वरन देश भरि मे यशस्वी बनलाह।

एमहर भुवनेश्वर प्रसादजी पिता राम नारायण गुरुमैता जीक बचनक पालन करय मे जुटि गेलाह। माता श्री केँ तीर्थाटन करौलन्हि। अपने तन-मन आ यतन सँ पढ़य लगलाह। दरभंगा सँ इन्टरमीडिएट आ स्नातक नीक अंक सँ पास कयलन्हि। पटना विश्वविद्यालय सँ 1951 ई. मे स्नातक प्रतिष्ठा उच्च अंक सँ पास कयलन्हि। आँगाक पढ़ाईक वास्ते काशी हिन्दू विश्वविद्यालय सँ एम.ए. सन 1953 मे पास कयलन्हि। पद्म विभूषण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीक सानिध्यमे पी.एच.डी. पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ सँ 1965 मे कयलन्हि। काशी हिन्दू विश्वविद्यालयहुमे ओ संघक सक्रिय कार्यकर्त्ता बनल रहलाह। ओतय हुनका बहुतो विद्वान सभ सँ भेँट भेलैन्ह। आचार्य नरेन्द्र देव जे कुलपति छलाह, आचार्य हजारी

प्रसाद द्विवेदी, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पद्म नारायण आचार्य, ओंकार नाथ ठाकुर, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, आचार्य विनोवा भावे, संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान डॉ. सूर्यकान्त सभक सानिध्य मे रहलाह। एहि विद्वानक संग बहुतो कार्यक्रम मे भाग लेलन्हि। 1952 मे एल.एल.बी. प्रीभियसक परीक्षा उत्तम श्रेणी सँ पास कयलन्हि। तत्पश्चात् एल.एल.बी. फाइनल परीक्षा छोड़ि संघक पूर्णकालिक प्रचार मे लागि गेलाह। चम्पारण आ कोसी क्षेत्रक प्रभार मे रहलाह। एहि बीच पुन: किछु राजनेता आ प्रसिद्ध साहित्यकारक सानिध्यमे रहलाह। स्वनाम धन्य डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. अमर नाथ झा, डॉ. सुभद्र झा, पद्म भूषण बासुदेव शरण अग्रवाल, पद्म भूषण राम कृष्ण दास, राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त, श्री भाव राव देवरस, पण्डित दीन दयाल उपाध्याय, लक्ष्मण जी मिड़े, नानाजी देश मुख, आचार्य रघुवीर, अटल बिहारी बाजपेयी, विनोवा भावे आदिक सम्पर्क मे अयलाह। ओहि समयक हिनक बहुतो घटना उल्लेखनीय अछि। एहि क्रम मे माननीय पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी जीक संगक घटना दिलचस्प अछि। गौरवक संग कहबाक अछि जे मार्च 1954 मे बर्द्धा जिलाक शिण्डी गाम मे अखिल भारतीय संघक कार्यकर्त्ताक शिविरक आयोजन भेल छल। जे 12 दिन तक चलल। एहि शिविर मे अटल जी सेहो छलाह। ओहि शिविर मे एक दिन अटल जीक संग कबड्डी खेलबाक संयोग बनल। खिलाड़ी दू दलमे विभक्त भेल। एक दलक खिलाड़ी भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता आ दोसर दल मे अटल बिहारी बाजपेयी जी छलाह। कबड्डी खेल शुरू भेल। अटल जी कबड्डी-कबड्डी पढ़ैत भुवनेश्वर जीक सीमा मे प्रवेश केलन्हि। किछु देर तक सीमाक अन्दर मे रहलाक बाद पुन: अपना सीमा मे दौड़ैत वापस भेलाह। भुवनेश्वर प्रसाद जी पिठिया ठोक कबड्डी-कबड्डी पढ़ैत अटल जी कैँ खदेरऽ लगलाह। खदेरैत काल

जोर सँ हुनका पीठ पर तमाचा लगौलथि। जाहि सँ अटल जीक पीठ पर आंगूरक निशान उभरि गेल। ई बात अटल जी कैँ जीवन पर्यन्त याद रहलैन्ह।

मैथिली कैँ जखन अष्टम अनुसूची मे आनबाक हेतु भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता जी अपन शिष्ट मण्डलक संग हुनक प्रधान मंत्रीत्व कालमे हुनका सँ भेँट कयने छलाह। तखन एहि घटनाक उल्लेख अटल जी ठहक्का मारि कयने छलाह। बाजल रहथि-

"गुरुमैता जी हमारी पीठ साक्षी है, आपके धमाके की।"

एहि शब्द सँ गुरुमैता जी कैँ सम्बोधित करैत मैथिली कैँ अष्टम अनुसूची मे आनबाक वचन देलन्हि। आ किछु दिनक बाद वचनक पालनो केलथि। जाहि पर आई मिथिला गौरवान्वित अछि। मिथिलावासी अटल जीक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत रहत। अर्न्तराष्ट्रीय मैथिली परिषद अपन हरेक सम्मेलन में कोसी महासेतुक नाम 'अटल महासेतु' रखबाक प्रस्ताव पास कय सरकार कैँ पठबैत अछि। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी जी गुरुमैता जी कैँ मंत्री मण्डल मे आनबाक हेतु प्रयास कयने छलाह। मुदा भुवनेश्वर बाबू ओहि प्रस्ताव कैँ अस्वीकृत कय अपन नि:स्वार्थक परिचय दयने छलाह।

यशस्वी लेखक डॉ. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता प्रकृति आओर संस्कृति-सानिध्य प्रेमी छथि। अध्ययनशील आ घुमक्कड़ छथि। सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, प्राकृतिक आ प्राचीन आओर अर्वाचीन केन्द्रक दर्शन-चिन्तन सँ उत्प्रेरित होमय बाला डॉ. गुरुमैता अपना लेखनी मे ओहि शास्वत, स्थायी आ मूल्यवानक प्राणवान रूपमे उजागर आ निरूपित करैत छथि जे मानव कैँ चिर जागृत राखऽ मे कारगर अछि।

डॉ. भुवनेश्वर प्रसादक जीवनीपर एक झलक-

जन्म: 14.01.1930 ई. भपटियाही, जिला सुपौलमे भेल छल।

पिता: स्व. राम नारायण गुरुमैता 'जिज्ञासु'

वी.ए. कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ 1936 ई.सँ पूर्व आर्य समाजक मंत्री माता- स्व. श्रीमती श्यामादेवी संरक्षक- अर्न्तराष्ट्रीय मैथिली परिषद सेवा निवृत प्रोफेसर, भाषा एवं संस्कृति विभाग, हरियाणा विश्वविद्यालय हिसार वी.ए. (ऑनर्स) 1951 ई. मिथिला कॉलेज दरभंगा।

एल.एल.बी. प्रीवियस (हिन्दू विश्वविद्यालय काशी)

एम.ए.: काशी हिन्दू विश्वविद्यालय 1953, पी-एच.डी. पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़। शोध निदेशक- पद्म विभूषण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी। हिन्दी विभागाध्यक्ष एंव टाइगोर चेयर प्रोफेसर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

सेवा निवृति : 30.11.1992

1. साहित्य सचिव- कोसी आंचलिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन (1954-57)

2. महासचिव- अखिल भारतीय साहित्य परिषद, हरियाणा प्रदेश (1968-92)

3. प्रांतीय उपाध्यक्ष, हरियाणा हिन्दी साहित्य सम्मेलन (1969-72)

4. राष्ट्रीय संगठन सचिव, राट्रीय साहित्य सचिव, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं पूर्वांचल प्रमुख, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, क्रमश: 1968-2006 तक

अनेकानेक सम्मानसँ सम्मानित भेलाह।

1. मिथिला विभूति पुरस्कार (चेतना समिति पटना तथा मैथिली अकादमी पटना द्वारा)

2. नेपाल राष्ट्रीय हिन्दी महाकवि पं. रमाकान्त झा पुरस्कार

3. अखिल भारतीय साहित्य परिषद हरियाणा, गुरुग्राम द्वारा प्रदत्त साहित्य पुरस्कार

4. अखिल भारतीय साहित्य परिषद, राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मान दिल्ली

5. अखिल भारतीय सरस्वती शोध संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन द्वारा सरस्वती नदी अनुसंधान कार्य

6. अखिल भारतीय साहित्य परिषद, भिवानी तथा सहरसा द्वारा राष्ट्रीय साहित्य पुरस्कार

हिनक अनेकानेक पोथीक समालोचनात्मक, साहित्यिक एवं ललित निवंध संग्रह प्रकाशित भेल अछि-

1. आधुनिक भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय चेतना
2. प्राचीन भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय अस्मिता
3. वर्ण रत्नाकरक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
4. प्रेरक ऐतिहासिक एकांकी
5. यमुना का जल
6. आत्मोत्सर्ग
7. हर सिंगार लिलता है

8. चम्पक उदास क्यों?

9. सामाजिक समरसता के अग्रदूत गुरुजी

10. दृष्ठान्त परक कथाएँ

11. भारत माता के पाद-पद्म में

12. आम में बौर आ गए

13. कण-कण राजस्थान का

14. प्रेरक ऐतिहासिक कहानियाँ

गुरुमैता जी अपन लेखनीक माध्यम सँ 'आधुनिक भारतीय साहित्य मे राष्ट्रीय चेतना' प्राचीन भारतीय साहित्य मे राष्ट्रीय अस्मिता, वर्णरत्नाकरक पृष्ठभूमि, मध्यकालीन साहित्यक सांस्कृतिक अध्ययन, यमुनाक जल (कहानी संग्रह) आत्मोत्सर्ग (लघु कथा संग्रह) ऐतिहासिक एकांकी, भारत माता के पाद पद्म में (दक्षिण भारतक यात्राक कथा) एकर अतिरिक्त लगभग साए शोध पत्र आ तीन साए निबन्ध समीक्षा, अनुवाद आदि देशक विविध शोध पत्रिका मे प्रकाशित आ प्रकाशाधीन एक दर्जन सँ अधिक पुस्तक अछि। हम हमरा सम्पूर्ण भारतवासीकेँ एहेन महान विभूति, जे पैघ विद्वान, साहित्यकार आ स्वतंत्रता सेनानी छथि, पर गर्व अछि। मिथिलांचल आ देशक लोक केँ एहन पैघ विद्वान, साहित्यकार, स्वतंत्रता सेनानी पर गर्व अछि। ❑

स्व. रामफल मण्डल

जखन भारत माताक हाथ और पैरमे बेड़ी लागल छल यानी देश परतंत्र छल। अंग्रेजक गुलाम हम सभ छलहुँ ताहि समयमे बहुतो कर्मठ, साहसी नौजवान भारत माताकेँ आजाद करबाक हेतु अपन बीड़ा उठौने छलाह। बिहारक राजधानी पटनामे सचिवालयपर तिरंगा झंडा फहरेबाक हेतु सातटा नौजवान अपन कुर्बानी दयने छल। ओहि समयक युवा क्रान्तिकारी रामफल मण्डलजी छलाह। हिनक जन्म उत्तर बिहार केर सीतामढ़ी जिलाअन्तर्गत बाजपट्टी थानाक मधुरापुर गाममे 6 अगस्त 1924 ई.केँ भेल छलैन्ह। हिनक पिता गोखुल मण्डल आ माता गरीबी मण्डल छलथिन्ह। गोखुल मण्डलकेँ चारिटा पुत्र छलन्हि। प्रथम- रामशरण मण्डल, दोसर- महंथ मण्डल, तेसर रामफल मण्डल आ चारिम मिसरी मण्डल। रामफल मण्डल अपन बापक तेसर पुत्र छलथिन्ह। सभ भाँइ खेती आ पशुपालन करैत छलाह। जाहिसँ नीक जमीन जथा बना लेलन्हि आ खूब सम्पन्न भय गेलाह। हिनक पिता गोखुल मण्डल किराना दुकान करैत छलाह। सभ भाईक शादी-विवाह भय गेल छलन्हि। रामफल मण्डलक विवाह 16 सालक उमेरमे रून्नी सैदपुर प्रखण्डक गंगवारा गामक अमीन मण्डलक बेटीक संग भेलन्हि। जाहिसँ हिनका एक पुत्र रत्न दिनांक 15.09.1942 ई.केँ भायक सासुर नेपालक एक गाम लछमिनियाँमे भेल छल। ओ बालक सात मासक बाद बीमार

रहलाक कारण कालकवलित भय गेलैक। ओहि समयमे रामफल मण्डल आन्दोलनक कारण जहलमे छलाह। मण्डलजीक प्राथमिक शिक्षा पड़ोसी गाम संढ़बारामे भेल रहन्हि। 14 सालक उमेरमे मिडिल पास कयने छलाह। बालपनमे अखराहापर कुश्ती लड़ैत छलाह। जाहिसँ लोक सभ खलीफा कहैत छलन्हि। लाठी भाँजऽ मे बड़ निपुण छलाह। अपना लाठीक मादे ओ सभकेँ यैह कहैत छलाह जे अंग्रेजकेँ एहि लाठीसँ मारि कय भारतसँ भगायव। लाठीए हमर बन्दुक थिक। अंग्रेजसँ उबिकय लोक सभ हुकुमतक खिलाफ गामो घरमे बोल-चाल शुरू कय दयने छलैक। हिनका गामक कचहरीपर प्रमुख आन्दोलन कारी लोकनि बिन्देश्वरी प्रसादक नेतृत्वमे बैसार कयने रहैक। ओहिमे गामक नायकक रूपेँ रामफल मण्डल चयनित भेल रहथि। ओहि गाममे गुप्त कार्यालय 'आजाद हिन्द फौजक' रहैक। गुप्त कार्यालयमे लाठी चलौनाई, बम बनौनाइ आ गुरिल्ला युद्धक प्रशिक्षण देल जाइत छलैक।

आजादीक आन्दोलनमे बिहारक भूमिका अति महत्वपूर्ण रहल छैक। देवघर बिद्रोह (1857) दानापुर विद्रोह (1857) बिरसा मुंडा- खुंटी विद्रोह (1900) चम्पारण सत्याग्रह (1918-19) आ करू आ मरू आन्दोलन 1942) मे बिहार अग्रणी भूमिका निभौलक। पहिले दिनांक 13.06.1857 ई. रोहणी देवघर झारखण्डमे तीन देशी सैनिककेँ विद्रोह कयलापर फाँसी देल गेलैक। तखन बंगालक राज्यक भीतर बिहार आसाम आ उड़ीसा रहैक। महात्मा गाँधीजीक अगुआईमे अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटिक अधिवेशनक सभापतित्व अब्दुल कलाम आजाद द्वारा भेल रहैक, ताहिमे एकटा प्रस्ताव छलैक 'अंग्रेज भारत छोड़ो' एहि अगस्त क्रान्तिक धधरा समुच्चा देशमे पसरलैक। भला बिहारक सीतामढ़ी कोना पाछू रहितैक। 9 अगस्त 1942 सँ 19 अगस्त 1942 केर

समय बड़ दु:खदायी कहल जा सकैछ। अंग्रेजी सिपाही बहु-बेटीक ईज्जत लुटैत छल। खादी भण्डार, बाबा नरहिस दास रामनन्दन सिंह, मोहन सिंहक घर जला देलक। पुपरीक दरोगा अर्जुन सिंह उत्पात् मचाबय हेतु दि. 24.08.1942 कैँ बाजपट्टी आबय बाला छल, से पता चैलते आन्दोलनकारी सभ गुप्त बैसार बनगाममे आयोजित कैलथि। ओहि ठाम रामफल मण्डलकैँ शपथ देल गेलैन्ह जे दरोगाकैँ सबक सिखेबाक अछि। एहि बातक सूचना कियो दरोगाकैँ दय देलकैक। दरोगा कन्नि काटि रास्ता बदलि लेलक। ता जुमि गेल एस.डी.ओ. दीप नारायण सिंह, चपरासी दरबेशी सिंह आ पुलिस इन्सपेक्टर राममूर्ति झा आ हबलदार श्यामलाल। एहि मौकापर सीटीक आवाज सुनिते फरसासँ सभकैँ गरदैन मण्डलजी काटय लगलाह, खूनक फब्बारा देखितहि जीप छोड़ि चालक आदित्य राम परायल आ जाकय हत्याक आरोप लगबैत मोकदमा दायर केलक। क्रमश: चालक केर वयानपर रामफल मण्डल, बाबा नरसिंह दास कपिलदेव सिंह आ हरिहर प्रसाद समेत 4000 लोकक खिलाफ हत्याक मोकदमा चलय लगलैक। रामफल मण्डलक घरकैँ आगि लगा कऽ जरा देलकैक। मण्डलजीक खेतकैँ जोति वर्वाद कय देलकैक। ताहिपर ऐलान केने रहैक जे कियो रामफल मण्डलकैँ पकड़ौत ओकरा 5000 टाका इनाम देल जेतैक। ताहि लालचसँ हनुमान नगर (नेपाल) अपन भायक सासुरसँ गाम अयलापर कानाफुसी करय लगलै। किछु शुभेक्षु लोक सभ कहलकैन्हि फेरो ओतहि चलि जाकय रहू। भारतमे अहाँ ऊपर बड़ खतरा अछि। ओ नहि मानलनि। ओ बजलाह आओरो अंगरेजबा सभकैँ काटबैक। मण्डलजीक मित्र दफेदार शिवधारी कुंवर छलसँ नशा खुआ देलकनि आ नीक-नीक गप्पमे ओझरौने रहलैक। रसे-रसे जखन अन्हार हुअ लगलैक तँ मण्डलजी बेहोश भय गेलाह। बेहोशी हालतमे हाथ-पैर

कड़ीसँ (जंजीर) बान्हि गिरफ्तार कयलक। सीतामढ़ीक जहलमे राखल गेलाह।

15 जुलाई 1943 ई. काँग्रेस कमेटी-बिहार राज्य केर बैसारमे रामफल मण्डलजी एवं आन दोसरोक सम्बन्धमे एस.डी.ओ., इन्सपेक्टर आ आनो पुलिस कर्मी गणकेँ हत्याक आरोप पर विशेष चर्चा भेलैक। कमिटीक आग्रहपर महात्मा गाँधीजी रामफल मण्डल आ आन आरोपीकेँ बचेबाक पक्षमे क्रान्तिकारी गणक मोकदमा लड़य बाला देशक जानल-मानल बंगालक वकील सी.आर.दास आओर पी.आर. दास दुनू भाँइकेँ पठौलनि। रामफल मण्डल एवं आओर ओरोपितक विरूद्ध 473/1942 केर तहत् नालीश दायर भेल छलैक। वकील महोदय अपना जनैत रामफल मण्डलकेँ खूब नीक जकाँ बुझा देलनि जे अदालतमे जजक समक्ष अहाँ ई कहबैक जे हम हत्या कीनहु नहि कयलहुँ। 3000-4000 लोकमे सँ के मारलकै से हम नहि जनैत छी। दिनांक 12 अगस्त 1943 ई. केँ भागलपुरमे जज सी.आर.सैनी केर कोर्टमे पहिले बहस भेलैक। तहन जज महोदय रामफल मण्डलसँ पुछलथिन्ह- “की तू एस.डी.ओ. हर दीप नारायण सिंहक खूनी छैं?” तँ रामफलजी बजलाह, ‘हँ, हुजुर। पहिले फरसासँ हमहीं मारलौं।’ आर लोक सभ हत्या करैसँ इन्कार कऽ गेलाह। बहसकेँ बाद वकील साहव मण्डलजी पर बिगड़ैत डाँटलक आ बजलाह अन्तिम बहसमे जौं फुसि नहि बजबह तँ तौं बुझह। रामफल मण्डल बजलाह- साहब, आब नै गरबरेतैक। दोसरो दिन सैह। तेसर बहसक दौरान जज साहेव फेर पुछलकैन। एस.डी.ओ. केर खून अहीं तँ नहि कयलौंह। ‘हजूर एस.डी.ओ.केँ पहिले फरसा हमहीं मारलौं। एहि तरहेँ तीन दिन तक बहस चलैत रहल। परंच रामफल मण्डल अधिवक्ताकेर लाख समझेलापर फुसि नहि बजलाह। भरिसक ओ सरदार भगत सिंहक फाँसीक समय देल

गेल वाक्यकेँ आत्मसात् कय लेने रहथि। विचारक शानपर इनक्लावक धार तेज होईछ।

जज सी.आर. सैनी रामफल मण्डलकेँ फाँसीक सजा सुनौलक। फाँसी दै सँ किछु मिनट पहिले जेलर पुछलकैक- ‘अपनेक अन्तिम इच्छा की अछि। ओ उत्तर देलनि- हमर इच्छा यैह अछि जे अंगरेज हमरा देशसँ सदा केर लेल चलि जाइथ। आ भारत माताकेँ गुलामीक जंजीरसँ मुक्त कऽ सम्पूर्ण भारत वर्षकेँ स्वतंत्र कय देल जाय। भादव मासक पहिल मलेमास दिन रविवार 23 अगस्त 1943 केर मनहुस भोरकेँ भागलपुर सेंट्रल जहलमे 19 साल 17 दिनक वयस क्रममे एहि गोरनार आँठिया केशबला भारतक लालकेँ फाँसी पड़ि गेलैक। मण्डलजी हँसिते-हँसिते फांसीक फन्दाकेँ गलामे डालि लेलनि। आजाद भारतक निर्माणमे अपन नाम अमर कय गेलाह। एहि महत्वपूर्ण योगदानक लेल भारतवासीक नव पीढ़ीक लोक सभ हर हमेशा रामफल मण्डलक आभारी रहत। भारतक लाल मिथिलाक सपूत माँ जनक नन्दनी जानकीक सभसँ प्रिय आन्दोलनकारीकेँ भगवान स्वर्गोमे नीक स्थान देथि। से हमर सुभकामना।

स्व. रामफल मण्डलक करनीसँ ई पता लगैत अछि जे ओ हर हमेशा तन समर्पित मन समर्पित और जीवन भारत माताक लेल समर्पित कय अमर भय गेला। हमर मिथिलावासीक ई कर्त्तव्य अछि जे एहन कर्मठ, सत्यवादी, साहसी आ भारत माताक लेल अपन जीवन न्यौछावर करऽ बलाक लेल सदा नतमस्तक रही।

अमर शहीद रामफल मण्डल विचार मंचक राष्ट्रीय अध्यक्ष ई. शैलेन्द्र मण्डल धन्यवादक पात्र छथि जे कर्पूरी भवन बेलहामे 10 सितम्बर 2022 केँ एकटा अमर शहीद रामफल मण्डल राष्ट्रीय पुरस्कारक आयोजन कय स्व. मण्डलकेँ महीमामण्डित कय मिथिला

आ सर्वहारा वर्गक एहेन सपूतकेँ श्रद्धांजलि अर्पित कयलन्हि।

एहि समारोहक उद्घाटनकर्त्ता जनता दल यूक राष्ट्रीय अध्यक्ष सह सांसद माननीय राजीव रंजन सिंह ऊर्फ ललन सिंह छलाह। विशिष्ट अतिथि उपेन्द्र कुशवाहा, उमेश कुशवाहा, डॉ. मदन मोहन झा, रामचन्द्र पूर्वे, विजेन्द्र प्रसाद यादव, श्रवण कुमार, चन्द्र शेखर यादव, संजय झा, मदन सहनी, श्रीमती लेसी सिंह, समीर कुमार महासेठ, शीला मण्डल, संतोष कुमार सुमन, अशोक चौधरी, मो. जमा खान, दिनेश चन्द्र यादव, दिलेश्वर कामत, रामप्रीत मण्डल, फैयाज अहमद, गुलाम गौस, मीना कामत, सुधांशु शेखर, अनिरूद्ध प्रसाद यादव, राम विलास कामत, श्रीमती वीणा भारती, अजय कुमार, ललित कुमार मण्डल, रत्नेशसदा, गुजेश्वर साह, मंगनीलाल मण्डल (पूर्व सांसद सह पूर्व मंत्री), देवेन्द्र प्रसाद यादव, रामनेश पाण्डे, उदय कान्त चौधरी, राम कुमार यादव, श्रमती भावना झा, महागठवंधनक तमाम घटक दलक जिला कमिटिक अध्यक्ष सभ उपस्थित छलाह। गुदरीक लाल स्व. रामफल मण्डलक विषय मे वक्तव्य देनिहार उपरोक्त सभ मत्रीगण, विधायक गण, सत्ताधारी नेतागण धन्यवादक पात्र छथि जे मण्डलजीकेँ जनलनि।

सभसँ धन्यवादक पात्र ई. शैलेन्द्र मण्डल आ मंत्री शीला मण्डल छथि जे एहि मामूली ग्रामीण परिवेशमे जन्म लेनिहार स्व. रामफल मण्डलक बारेमे एहेन आयोजन कलैन्ह। ई समारोह भलेँ ही सत्ता धारी पार्टीगण केलैन्ह अपन राजनीतिक लाभक लेल। मुदा एक पंथ दुई काज। अहाँकेँ राजनीतिक लाभ मिलल अथवा नहि मुदा स्व. रामफल मण्डलजी केँ तँ आत्माक शान्ति मिललन्हि। आ मिथिलावासी लोकनिकेँ स्व. मण्डलजीसँ प्रेरणा भेटल। लोक सभ लाभान्वित तँ भेलाह। बच्चा-बच्चा एहि क्रान्तिकारी नौजवानकेँ भगत सिंह, खुद्दीराम बोसक श्रेणीमे राखलन्हि। ❑

स्व. अनन्त लाल कामति

मिथिलाक एकसँ एक विभूति स्वतंत्रता आन्दोलनमे बढ़ि-चढ़िकऽ भाग लेने छथि।

यदा-यदा ही धर्मस्य ग्लार्निभवति भारत।

अभ्युथानम अधर्मस्य तादात्मान् शृजाम्यहम्

परित्राणाय साधुनां विनाशाय चदुस्कृताम्।

धर्म संस्थापनार्थय सम्वावानि युगे युगे।।

जखन धर्मक क्षरण आ पापक वृद्धि होइत अछि तखन-तखन भगवान स्वयं एहि पृथ्वीपर शरीर धारण कय अबैत छथि आ दुष्ट दानवकेँ नाश कय धर्मक स्थापना करैत छथि। भारत आध्यात्मिक देश अछि। एहिठामक लोक भगवानकेँ सर्व शक्तिमान बुझैत छथि। भारत माता बहुत दु:ख झेल लेने छथि। विदेशी आक्रमणक दंशसँ त्रसित छलीह। अंग्रेजक क्रुरतासँ लोक परेशान छल। देशसँ आतंकवादी अंग्रेज सरकारकेँ भगेबाक छल। ईश्वरक असीम कृपासँ भारतमे ईश्वरक सदृश्य महात्माक पर्दापण भेल। ओहि महात्माक समर्थनमे अंग्रेजक गुलामीसँ छुटकारा पाबक लेल बहुतो महान पुरुष सभ एकत्रित भय आन्दोलन चलौलैथ। एहि आन्दोलनमे बहुतो आन्दोलनकारी जे अपन तन-मन-धन सँ भाग लेने छलाह। बहुतोकेँ हम जनैत छलहुँ जिनका सभक उल्लेख विभिन्न पत्र-पत्रिका आ

पुस्तक मे भेटल छल मुदा किछु एहनो आन्दोलनकारी छलाह जे अपन, धन, सम्पति, इज्जत, प्रतिष्ठा सभ किछु गमा अपन जीवनोक बलिदान दय देने छलाह जकर चर्चा इतिहासक पन्नामे नहि भेटल छल। इतिहासकार आ साहित्यकार एहेन गुमनाम बलिदानी व्यक्तिकेँ नहि खोइज सकलाह। एहि गुमनाम मे एकटा दिव्य पुरुष जिनक नाम अनन्त लाल कामति छलैन्ह। ओ हेरायल छलाह। झंझारपुर लोक सभाक अन्तर्गत गड़बा नाम प्रसिद्ध गाम अछि। ओहि गाममे स्व. अनन्त लाल कामतिक जन्म 19 जनवरी 1911 ई. दिन गुरुवारकेँ भेल छलन्हि। हिनक माता गजनी देवी आ पिता हरिनन्दन कामति रहैन। हिनक प्राथमिक शिक्षा हुलासपट्टी विद्यालयमे सम्पन्न भेल छलन्हि। 1927 ई. मे मिडिल पास कयने छलाह। ई कहनाइ अतिशयोक्ति नहि होयत जे एहि विद्यालयमे पढ़निहार अधिकांश लोक सभ स्वतंत्रता सेनानी छलाह, बाबू भुवनेश्वर गुरुमैता, बाबू रसिक लाल यादव आदि। स्वतंत्रता आन्दोलनमे गुरुमैताजीक आ यादवजीक भूमिका अहम छलैक। एकटा खद्धरधारी बाबाकेँ सभ प्रणाम करथि। सभ कहथि गोर लगैत छी महात्माजी। हम हुनका बारेमे विस्तृत जानकारी लालदेव कामतजीसँ लेबाक प्रयास कयलहुँ। हिनक पारिवारिक सूत्रसँ जनतब लेबय लगलहुँ आ सभ जानकारी हमरा उपलब्ध करौलथि। ओ महानुभाव अनन्त बाबूक परोक्ष भेला संता अनन्त जीवन ज्योति संस्थानक सूचना पाबि जयन्ती कार्यक्रममे भाग लय विस्तृत जानकारी लेबय लगलाह, जयन्तीमे भाग लेनहार सभ अनन्त बाबूक व्यक्तित्व आ कृतित्वपर प्रकाश डालय लगलाह। ताहि संवाद सँ हमर मित्र अनन्त बाबूक इतिहास-भूगोल आ नागरिकक खोज करय लगलाह। हुनका एहि विषयक मूल तथ्य सँ मानसिक खुराक भेटय लगलन्हि। आ सभ जनतब हमरा देलैथ। जाहि तथ्य लय हम आगा

बढ़लहुँ ओहि समयक परतंत्र भारतकेँ गुलामीसँ त्राण दियेबाक लेल ब्रिटिस शासन केर विरूद्ध शंखनाद भेल रहय। देशक आजादीक महत्व पबिते 1930 ई. मे अनन्त बाबूक संवेदना जगलनि आ ओ गाँधी जीक नरम दलमे शामिल भय गेलाह। ज्ञातव्य हुए जे प्रलयकारी आ विनाशकारी भूकम्प सेहो 1934 ई.मे भेल छल। जाहि भूकम्पक क्षमता रेक्टर स्केलपर 8.4 छल। एहि भूकम्पसँ भेल जान-मालक क्षतिकेँ पूर्ति करबाक हेतु डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जे स्वतंत्र भारतक पहिल राष्ट्रपति छलाह, ओ भूकम्प पीड़ितक सहायतार्थ राहत पहुँचेबामे सेहो अनन्त बाबूक सराहनीय भूमिकाक निर्वणह कयने छलाह। 1935 मे अनन्त बाबू जिला काँग्रेस कमिटि दरभंगाक सदस्य चुनायल छलाह। 1940 मे राष्ट्रीय काँग्रेसक अधिवेशन रामगढ़मे भेल छल। ओ राम नारायण गुरुमैताक संग दरभंगा जिलाक प्रतिनिधित्व कयने छलाह। 1941 मे दरभंगा जिला परिषदक वायस चेयर मैन बाबू खुशी लाल कामतक संग दयने छलाह। 1942 मे महेश्वर लाल व्यास दासजीक संग देवनाथ पट्टी-नौआबाखरमे जातीय महासभाक आयोजन कयने छलाह। सन् 1939 ई.मे पूज्य गाँधीजीक विशाल सभाक आयोजन भेल छल। ओहि विशाल सभामे अनन्त बाबू बढ़ि-चढ़िकऽ भाग लेने छलाह। एहि विशाल सभामे हजारक-हजार लोक भाग लेने छलाह। अगस्त 1942 मे पूज्य बापू महात्मा गाँधीजीक अध्यक्षता- मुम्बईमे राष्ट्रीय कार्यकारिणीक बैसार भेल छल। ओहि बैसारमे निर्णय भेल जे अंग्रेजो-भारत छोड़ो आन्दोलन चलायल जाय। एहि प्रस्तावकेँ पारित होइतहि अनन्त बाबू आओर सक्रिय रूपसँ अभियानमे लागि गेलाह। झंझारपुरमे छात्र आ आमजनकेँ संगठित कय ओतुका थानापर तिरंगा फहड़ा देलनि। लोकक मनमे देशभक्तिक भावना जगाय 13 अगस्त 1942 केँ फुलपरास थाना आ अवर निवंधन कार्यालयक

कागजातकेँ जरा देलनि आओरो संगीक संग रेलक पटरी आ टेलीकॉम सेवाकेँ वाधित कय देलक। अनन्त बाबू आ हिनक संगी-साथीक खिलाफ मुकदमा दायर भेलैक। ओ आजादीक हेतु अलख जगाबैत 9 मास धरि नेपालमे शरण लेलथि। जखन ओ अपन पैतृक गाम गढ़बा अयलाह, अंग्रेजी क्रूर शासनक अत्याचारक चलते, आमक गाछीमे गाछपर नुकायल रहलाह। राति मे गाछपर रहैत छलाह आ दिनमे आन्दोलनकेँ सक्रिय रखैत छलाह। हिनक गौंआँ एकटा साफीजी जे अंग्रेजक दलाल छल, ओ अंग्रेज सिपाहीकेँ बतौलक जे अनन्त लाल जी एहि गाछीमे नुकायल छथि। अंग्रेजक सिपाही आमक गाछीमे जा कय अनन्त बाबूकँ गिरफ्तार कय लेलक। जखन गिरफ्तार कय लय जाय लगलैक तखन हिनक दादी आधा मन चानीक गहना कोत बालक हाथे अंग्रेज सिपाहीकेँ पठौलक आ कहलक जे हमरा पोताकेँ छोड़ि दियौक। मुदा गोरा सिपाही चान्दीक गहनो लय लेलक आ अनन्त बाबूकेँ सेहो जेलमे भेज देलक। जहलसँ सात मासक बाद 1943 ई.मे जमानतपर रीहा भेलाह। जहलसँ अबिते देरी फेनो सँ स्वतंत्रता आन्दोलनमे जुटि गेलाह। 26 जनवरी 1945 केँ हुलासपट्टी मे स्थित जागेश्वर नाथ महादेव मंदिरपर अपन सहयोगी गरम दलक सेनानी स्व. रसिक लाल यादव संग तिरंगा ध्वज फहरेबाक जूर्ममे गिरफ्तार कय लेल गेलाह। ज्ञातब्य अछि जे स्व. रसीक लाल यादव स्वतंत्रता आन्दोलनक दिवाना छलाह। कईक बेर जहलक यात्रा कय चुकल छलाह। देश आजाद करेबामे संलग्न आन्दोलनकारीक संरक्षक सेहो छलाह। देश आजाद भेलाक बाद फुलपरास उ. विद्यालयमे विद्वान शिक्षकक रूपमे कार्य कयने छलाह, देश आजादक उपरान्त जहलसँ सुरक्षित घर अयलाह। एकर बाद जय प्रकाश नारायण जीक नेतृत्वमे समाजवादी पार्टीमे मिज्झर होइत रचनात्मक कार्य करय लगलाह।

वैह पार्टी वादमे शोसलिस्ट पार्टी कहओल गेल। अनन्तलाल बाबू होमियो मेडिकल कॉलेज लहेरियासरायसँ दिनांक 29.10.1943 ई.कैँ एच.एम.डी.एस.क सर्टिफिकेट प्राप्त कयने छलाह। आब ओ गामक बीमार लोकनिक इलाज करय लगलाह। सस्ता, सुलभ आ सुन्दर होमियोपैथिक इलाजकैँ बढ़ाबा दैत प्रचार-प्रसार कयलन्हि आ अपना परिवारसँ डॉ. राम नारायण कामतजीकैँ आगू बढ़ेलाह। प्रजा शोसलिस्ट पार्टीसँ ओ 1967 ई.मे फुलपरास विधान सभा क्षेत्रसँ बिधायक लेल चुनाव लड़ल छलाह। चुनाव हारि गेलाह। चुनावसँ पहिनहि ओ सन्त विनोवा भावे जीकैँ भूदान आन्दोलनमे भूमिहीनकैँ बेजमीनक कलंक मेटबैमे अगुआ बनल छलाह। सांगी पंचायतक जनता हिनका निर्विरोध सरपंच बनौलन्हि। तँ 21.4.1961 ई. कैँ मुजफ्फरपुरसँ सप्ताह दिनक आवासीय प्रशिक्षण प्राप्त कय गाम-गाममे न्याय करय लगलाह। श्रीमती इन्दिरा गाँधीक प्रधान मंत्रीत्व कालमे पूर्वी पाकिस्तानसँ बँगला देश बनबैपर जखन स्वतंत्रता सेनानीकैँ सम्मान पेंशनक घोषणा भेल। तखन भारतोमे ताम्र-पत्र धारी बनेबाक लेल बहुतो स्वतंत्रता सेनानीकैँ पेंशन देबाक लेल काज भय रहल छल। अनन्तलाल बाबूकैँ तत्कालीन विधायक माननीय देवनारायण गुरुमैता आ सांसद मा. योगेन्द्र झाजी दिनांक 22.7.1962 कैँ अनुशंसा कय अग्रसारित कयने रहथि। विधान सभाक माननीय सदस्य सूर्य नारायण सिंह हिनका बारेमे व्यक्तिगत रूपेँ पत्र लिखैत कहने रहथिन्ह जे कामती 1942 ई.क भारत छोड़ो आन्दोलनमे अहूँ हमरा संगे जहलमे रही आ किछु दिन भूमिगत सेहो रही। दिनांक 10.9.1972 कैँ हिनका पत्र लिखलैन्ह। बिहार विधान सभा एवं स्व. से. मा. समिति पटना दिससँ मा. हरिनाथ मिश्र सुचित केलथिन्ह जे हमरा समितिसँ अहाँकैँ लाभ भेटत। दिनांक 10.5.1973 आर्यावर्त अखवारमे स्वतंत्रता सेनानी सम्मान पेंशन

विषयमे प्रमुखतासँ समाचार छलप रहैक। जाहिमे हिनको नाम स्पष्ट रूपसँ छपल रहनि। एहि सन्दर्भमे हुनका राजि. पत्र स. 14 डी 136383 दिनांक 24.5.1973 गृह मंत्रालय भारत सरकारक लेखा विभागक जनतव देल गेल छलन्हि। दिनांक 17.10.1961 क घोघरडीहा प्रखण्डसँ झंझारपुर शाखा बिहार राज्य सहकारी भूमि विकास बैंकक लेल परामर्श दात्री पर्षदक बतौर सदस्य निर्वाचित भेल छलाह। गुदरीक लाल बिहार भूत पूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत कर्पूरी ठाकुर जीसँ नीक सम्बन्ध रहनि। जखन माननीय भूतपूर्व मुख्य मंत्रीक पत्नीक देहावसान भय गेल छेल। तखन अनन्त बाबू एकटा पत्र पटना पठेने रहथि। ताहि पत्रक उत्तरमे ठाकुरजी हुनका अपन भाई कहि सम्बोधित कयने छलाह। एहेन सहानुभूतिक लेल दिनांक 8.8.1984 ई.कैँ उद्गार व्यक्त कयने रहथि। ओ पत्रक जवाब स्वतंत्रता सेनानी सह अध्यक्ष बिहार प्रान्तीय कैवर्त्त (केवट) महासभा ग्राम- गढ़वा के पतापर पहुँचल रहनि। अनेकानेक प्रेरक संस्मरण हुनका उपलब्धिमे प्राप्त भेल छल। 15-6-2022 कैँ एहि महामानवक अपना निवास स्थानपर आकस्मिक निधन भय गेलन्हि।

कैवर्त्य समाज 19 जनवरीकैँ प्रत्येक वर्ष जयन्ती समारोह मनबैत छथि। ओहि महामानवक व्यक्तित्व आ कृतित्वपर प्रकाश डालल जाइत अछि। हुनक पौत्र श्री विजय बाबूक संयोजकत्वमे आ श्री लालदेव कामत जीक देख-रेखमे ओइ अवसरपर विभिन्न प्रकारक साहित्यिक गोष्ठीक आयोजन होइत अछि। मिथिलांचलक विद्वान साहित्यकारक जुटान होइत अछि। एहेन महान् आत्माकैँ नमन, वन्दन आ अभिनन्दन। ❑